श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज

(P.G. College Affiliated to MDSU Ajmer)

अजमेर रोड़, किशनगढ़, अजमेर (राजस्थान) 305801
दूरभाष : 01463-307000, ई-मेल : info@rkgirlscollege.edu.in
वेबसाइट : www.rkgirlscollege.edu.in

KNOWLEDGE IS POWER

शिक्षा एवं संस्कृति...

रत्नांक

Ratnank

महाविद्यालय पत्रिका

अंक : पाँच, मार्च 2022

श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज, किशनगढ़

(P.G. College Affiliated to MDSU Ajmer)

प्रधान संरक्षक : श्री अशोक पाटनी
संरक्षक : श्री महावीर कोठारी
CA सुभाष अग्रवाल
परामर्श : डॉ. रवि शर्मा
सम्पादक : डॉ. हुकम सिंह चम्पावत
टंकण : नेहा शर्मा
मुद्रण एवं वितरण : अमित दाधीच
राजेश जैन

श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज
अजमेर रोड़, मदनगंज-किशनगढ़,
अजमेर (राजस्थान) 305801
दूरभाष : 01463-307000
ई-मेल : info@rkgirlscollege.edu.in
वेब साइट : www.rkgirlscollege.edu.in

विषय	पृष्ठ
रत्नांक	2
अध्यक्ष संदेश	3
सचिव संदेश	4
प्राचार्य संदेश	5
सम्पादकीय	6
राजा की अकड़	7
ज्ञान प्राप्ति हेतु आत्ममंथन	8
आई.ए.एस. बनने वाली पहली दृष्टिहीन महिला है-प्रांजल	9
शिक्षा व ज्ञान प्राप्ति के क्षेत्र अनंत	10
शिक्षा और संस्कृति एक सेतु	11
शिक्षा एवं संस्कृति, धरती लहराएगी...., कागज और कलम	12
ऑनलाइन शिक्षा, आधुनिक शिक्षा, नई शिक्षा नीति	13
शिक्षा एवं संस्कृति का परस्पर सम्बन्ध	14
वर्दी, बेटियाँ एवं भारतीय ग्रामीण शिक्षा	15
गणित को सरलता से समझना चाहिए	15
शिक्षा और संस्कृति : व्यापक अन्तर्सम्बन्ध की समझ की आवश्यकता, वैदिक शिक्षा	16-17
नई शिक्षा नीति और पुस्तकालय	18
मुझे गर्व है कि मैं एक खिलाड़ी हूँ, सभ्यता एवं संस्कृति	19
गुरुकुल शिक्षा प्रणाली एवं आधुनिक शिक्षा	20
संस्कृति के संरक्षण और हस्तान्तरण में शिक्षा और शिक्षक की भूमिका	21
भगवत गीता एवं शिक्षा	22
शिक्षा और संस्कृति के समन्वय में तकनीकी की भूमिका	23
वैदिक शिक्षा पद्धति, शिक्षा में ध्यान का महत्त्व	24
शिक्षा का इतिहास, शिक्षा	25
योग रखे आपको नि:रोग	26
एक नई शुरूआत : ऑनलाइन शिक्षा	26
शिक्षा का सफर : वैदिक से....., गुरू का महत्त्व, ज़िन्दगी	27
भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य संस्कृति में अंतर	28
अनुशासन के प्रतीक हमारे खेल	28
अधूरा बचपन, किशनगढ़ : गुंदोलाव झील	29
जीवन हित में पर्यावरण	30
आधुनिक शिक्षा संस्कृति में गृहविज्ञान विषय की प्रासंगिकता	31
अंग्रेज़ी में कविताएँ	32-33

एक शिक्षा स्वप्न

शिक्षा से जब कदम बढ़ेंगे, श्रेष्ठ बनेगा देश
बेटी हो या बेटा हो, मेरा यह सन्देश !

विशाल हृदयी, सक्षमता की प्रतिमूर्ति पूज्य 'बाबासा' का शिक्षा से जुड़ा एक ऐसा स्वप्न जिसे वे अन्तर्मन से छूकर कहते थे कि इस शहर के आस-पास की निवासित समस्त बालिकाओं में शिक्षा की अलख जगाने हेतु एक ऐसा महिला शैक्षणिक केन्द्र हो जिसमें वे अपने भविष्य को निखारकर आत्मनिर्भर बन सके। वे महान व्यक्तित्त्व जिन्होंने अपने दीर्घ एवं गहन अनुभव से यह महसूस किया कि यदि घर की एक कन्या पढ़ेगी तो अनेक पीढ़ीयाँ शिक्षित होंगी तथा वे कहीं दबेगी नहीं, हारेगी नहीं, स्वयं को सफल, सक्षम बनाये हुए एक नव समाज की स्थापना करेंगी।

उनके इसी दिव्य स्वप्न को साकार करने का पवित्र कर्तव्य उनके परिजनों ने पूर्ण करते हुए किशनगढ़ क्षेत्र को अत्याधुनिक शिक्षा से जुड़ा एक ऐसा शिक्षण संस्थान समर्पित किया जिसे देखते ही लगता है मानो सरस्वती वाणी को ऊर्जस्वित करता ऐसा अद्भुत, अनुपम, अद्वितीय शैक्षिक संस्थान पहले नहीं देखा! इन पावन व उच्च विचारों के धनी 'बाबासा' एवं उनके परिवारजनों की शोभा जितने भी शब्दों में की जाए वहाँ शब्दों की अल्पता प्रतीत होने लगती है।

पूज्य 'बाबासा'
को कोटि-कोटि नमन !

"रत्नांक"

'रत्नांक' शब्द दो शब्दों यथा 'रत्न + अंक' शब्द से मिलकर बना है, जिसमें 'रत्न' से आशय धरती से प्राप्त बहुमूल्य खनिज पदार्थों से माना जाता है, जिसका सामान्य अर्थ प्रसिद्ध चमकीले खनिज पदार्थ हीरे, मणि, नगीना या जवाहारात से लिया जाता है। इसका विशिष्ट व महत्वपूर्ण अर्थ 'सर्वश्रेष्ठ' है।

इसमें दूसरा शब्द अंक है जिसका अर्थ संख्या, गोद, चिन्ह् व भाग्य माना जाता है। अतः 'रत्नांक' शब्द से आशय 'रतन के लिए अंक' या 'रतन की गोद में' से लिया जा सकता है। यहाँ 'रत्नांक' शब्द इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि हमारा पूरा समूह परम आदणीय श्री रतनलाल जी एवं उनके आत्मज कंवरलाल जी से ही पल्लवित है। ''रत्नांक'' शब्द में दो वर्णो यथा 'र' व 'क' की अपनी एक विशिष्ट महता प्रतिपादित है। इस शब्द में अग्र वर्ण 'र' पूजनीय श्री रतनलाल जी का स्मरण कराता है तथा शब्द का अन्तिम व पश्च वर्ण 'क' परम आदरणीय श्री कंवरलाल जी को पुष्ट करता है, साथ ही ये वर्ण हमारे महाविद्यालय के नाम को भी चरितार्थ करते हुए प्रतीत होते हैं।

इस शब्द के सामासिक स्वरूप से अर्थ को समझा जाये तो प्रथम अर्थ रतन के लिए अंक एवं द्वितीय अर्थ रतन के अंक में अर्थात् रतन की गोद में से माना जा सकता है। जिसका अर्थ परम पूज्य बाबासाहेब श्री रतनलाल जी को समर्पित प्रकाशित पत्र से है तथा दूसरा अर्थ पूजनीय बाबासाहेब की गोद में पल्लवित व पुष्पित समूह के सम्बन्ध में माना जा सकता है। महाविद्यालयी पत्रिका के सम्बन्ध में हमारा यह प्रयास है कि पंचम अंक के रूप में प्रकाशित यह महाविद्यालयी पत्रिका ज्ञान की आभा को प्रकाशित करते हुए परमपूज्य बाबासाहेब एवं परम आदरणीय श्री कंवरलाल जी सहित 'शिक्षा एवं संस्कृति' को समर्पित है। अतः इस पत्रिका का नाम 'रत्नांक' रखना हमारे महाविद्यालय ही नहीं अपितु सम्पूर्ण आर. के. समूह के लिए गौरव की बात है।

संपादक

संदेश

''शिक्षा'' शब्द के मूल में सीख अर्थ परिलक्षित है। मनुष्य जितना अधिक इस शब्द के मर्म को अनुभूत कर आगे बढ़ता जाता है उतना ही अधिक सीखता चला जाता है। सीख मनुष्य के लिए दृढ़ संकल्पना है, इसी से वह अपने स्वयं में कौशल की स्थापना करने में सक्षम व समृद्ध बनता है। पुरातन से लगाकर अधुनातन तक प्रत्येक ऋषि, मुनि, तीर्थंकर, गुरूजन इसी बात पर बल देते रहे हैं कि मनुष्य को निरंतर सीखते रहना या ज्ञान अर्जित करते रहना चाहिए। इसी परिकल्पना एवं संकल्पना का पर्याय हमारे महाविद्यालय की पत्रिका "रत्नांक" है जो हर विद्यार्थी में लेखन का कौशल स्थापित करने हेतु अनवरत प्रगतिशील है।

'शिक्षा एवं संस्कृति' आधारित "रत्नांक" के पंचम अंक की मैं संपूर्ण संपादन मंडल एवं महाविद्यालय परिवार को असीम बधाई व शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

इन्हीं मंगलकामनाओं सहित।

अशोक पाटनी
अध्यक्ष

संदेश

हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य परंपरा का अनूठा संगम रहा है। गुरु के सानिध्य एवं शिष्यत्व परंपरा का निर्वहन करने वाले शिष्य में गुरु अपने ज्ञान के माध्यम से हर कौशल की स्थापना करता है। इसी कौशल के अंतर्गत एक कौशल लेखन है। गुरु का यह सतत् प्रयास रहता है कि उसका शिष्य समाज के गहन अनुभव को अपनी लेखनी के माध्यम से नवरूपों में समाज के समक्ष प्रस्तुत करे। इन्हीं प्रयत्नों एवं प्रतिपुष्टित शब्दमय संरचना हमारी महाविद्यालय पत्रिका "रत्नांक" हैं।

हमारा विश्वास है "रत्नांक" पत्रिका की इस अनवरत लेखन यात्रा में विद्यार्थियों में लेखन रूपी मंजिल अवश्य प्राप्त होगी। "रत्नांक" पत्रिका के इस नव प्रकाशन अवसर की मैं असीम प्रसन्नता सहित संपूर्ण संपादन मंडल को बधाई व शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

सी.ए. सुभाष अग्रवाल
निदेशक एवं सचिव

संदेश

एक लेखक जब अपने जीवन की गहन अनुभूति को शब्दों में पिरोने का प्रयत्न करता है तब उसके विचारों की सार्थकता समाज के सम्मुख प्रकट होती है। सामान्य मनुष्य के सिद्धांतों में यह मुश्किल हो जाता है कि वह शब्द तो गढ़ लेता है परन्तु उसमें आत्मारूपी भाव नहीं बना पाता है। हमारा यह प्रयास है कि हमारे महाविद्यालय की हर बालिका में लेखन का भाव जाग्रत हो और वह एक अच्छी लेखिका के रूप में उभर कर समाज के समक्ष आये जिससे समाज को एक नई दिशा मिल सके। यही विनम्र प्रयास हमारे महाविद्यालय की पत्रिका "रत्नांक" के माध्यम से अनवरत गतिशील है।

हमारा विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से हमारी बालिकाओं में लेखन का हुनर स्थापित ही नहीं होगा अपितु वे लेखन में श्रेष्ठ मुकाम हासिल करते हुए महाविद्यालय को गौरव की अनुभूति करवायेंगी। "रत्नांक" पत्रिका के इन पुनीत प्रयासों में प्रयासरत सम्पूर्ण सम्पादन मण्डल व महाविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ देता हूँ।

डॉ. रवि शर्मा
प्राचार्य

सम्पादकीय

वर्तमान समय में शिक्षा संस्कृति व संस्कारों में अनेक समयानुकूल परिवर्तन दृष्टिगोचर है। भले ही यह समय का फेर हो परंतु भारतीय संस्कृति के प्राचीनतम स्वरूप को देखें तो उसमें जो शिक्षा, संस्कृति व संस्कारों के लिए गुरुकुल हुआ करते थे उनकी कमी आज अवश्य महसूस होती हैं। एक पुत्र या पुत्री जब विद्या ग्रहण करने योग्य हो जाते थे तब उन्हें विद्या अध्ययन हेतु विधि विधान के साथ गुरु के सानिध्य में गुरुकुल भेजा जाता था। उसके पश्चात् उसे विद्या अध्ययन पूर्णता तक घर से दूर गुरु के सान्निध्य में रहना होता था। उस समय इसके माता-पिता, पालक-पोषक, सब गुरु ही होते थे। इसके उदाहरण आप रामायण, महाभारत, गीता तथा अन्य अनेक प्राचीन साहित्य ग्रंथों में देख सकते हैं।

प्राचीन काल की शिक्षा पद्धति में सबसे महत्त्वपूर्ण यह था कि उस समय एक विद्यार्थी को अपने जीवन चलाने से लेकर समाज कल्याण तक की भावना का पाठ पढ़ाया जाता था। उसे समझाया जाता था कि आप जब शिक्षा ग्रहण कर समाज में कदम रखेंगे तब समाज को आप से क्या-क्या अपेक्षाएं रहेंगी। इसी कारण से प्रातः जल्दी उठना, शरीर को स्वस्थ रखने के लिए योग ध्यान करना, उदर पूर्ति हेतु भिक्षा प्राप्त करना, साहित्य अध्ययन, ज्ञान, ध्यान, यज्ञकर्म सीखना, जीवन में विपरीत समय पूर्णता हेतु व्रत उपवास करना, भविष्य में साम्राज्य विस्तार हेतु प्रबंधन, अस्त्र-शस्त्र ज्ञान व शत्रु बल को अल्प करने हेतु साम, दाम, दंड, भेद का ज्ञान प्रदान करना आदि। साथ ही हर विद्यार्थी में योग्यता एवं सामर्थ्यानुसार कौशल ज्ञान आवश्यक था जिससे वर्णानुरूप समस्त कार्य संपन्न हो सके। इन सभी बातों पर गहन अध्ययन करें तो हर विद्यार्थी का एक सर्वांगीण विकास गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में ही संभव था, परंतु अब यह सब कुछ बदल रहा है या बदल गया है जो समय के साथ कितना सही है सर्व हेतु विचारणीय है।

डॉ. हुकम सिंह चम्पावत
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग

राजा की अकड़

राजा भोज और कालिदास जंगल में शिकार खेलने गए और वापस लौटते वक्त रास्ता भटक गए। उस रास्ते के एक गाँव में उन्हें एक बूढ़ी औरत झाड़ू निकालती हुई दिखी। राजा ने बड़ी अकड़ से पूछा - ऐ बुढ़िया! ये रास्ता किधर जाता है ?

बुढ़िया ने उत्तर दिया - रास्ता तो कहीं आता जाता नहीं, बरसों से यहीं है। रास्ते पर तो मुसाफिर ही आया जाया करते हैं। तुम बताओ कि तुम कौन हो ? राजा फिर अकड़कर बोला - हम राजा हैं राजा ! बुढ़िया बोली - राजा तो दुनिया में केवल दो ही हैं, एक परमात्मा और एक आत्मा। तुम सही-सही बताओ तुम कौन हो ? राजा भोज ने अपना माथा पीटा और बोला हम यात्री हैं यात्री। बुढ़िया मुस्कुराई और बोली - यात्री तो इस दुनिया में केवल तीन ही हैं - पृथ्वी, सूरज और चाँद जो लगातार घूम रहे हैं, यात्रा कर रहे हैं। तुम बताओ तुम कौन हो ? राजा बड़ा शर्मिंदा हुआ बोला - हम गरीब हैं, हमें माफ कर दो। बुढ़िया ने फिर नहले पर दहला मारा और बोली, गरीब तो वो बेवा औरत है, जिसका बच्चा बीमार है और उसके पास दवा के पैसे नहीं हैं या फिर वो बकरी है जिसके सामने उसके बच्चे की बलि दी जा रही है। राजा बड़ा ज़लील और शर्मिंदा हुआ अंत में बोला मैं राजा भोज हूँ और ये कालिदास हैं, हमें माफ कर दो। बुढ़िया बोली - मैं समझ तो गई थी कि तुम राजा भोज हो और ये कालिदास हैं लेकिन तुम्हारी ज़रा अकड़ निकालनी थी, इसलिए तुम्हें घुमाया मैंने। तुम्हें तमीज होनी चाहिए कि बुजुर्गों से किस तरह बात की जाती है। खैर अंत में बुढ़िया ने उन्हें रास्ता बता दिया।

अतः व्यक्ति बड़ा अपने पद से नहीं,
अपने व्यवहार से होता है।

सी.ए. सुभाष अग्रवाल
निदेशक एवं सचिव

ज्ञान प्राप्ति हेतु आत्ममंथन

एक विद्यार्थी को जीवन में अध्ययन को आत्मसात् करना आवश्यक होता है। आज वर्तमान समय में विद्यार्थी के ऊपर प्रतिशत रूपी अंक गणित का अत्यंत बोझ है। यह वह बोझ है जिसके तले दबकर वह हर विषय का अध्ययन तो कर लेता है या यूँ कहें कि वह रट तो लेता है परंतु उससे आत्मसाक्षात्कार नहीं कर पाता। हमारे विद्वानों एवं मनीषियों ने हमेशा यही सीख दी है कि हम जिस विषय को पढ़ें उसे आत्मसात करते हुए उसका ज्ञान मन-मस्तिष्क में अवश्य उतारना चाहिए।

सर्वविदित है कि मनुष्य को मानवता की प्रतिमूर्ति माना जाता है। मानवता तभी सार्थक है जब वह जिस विषय का अध्ययन करे उसका आत्ममंथन करते हुए ज्ञान रूपी परम तत्त्व को प्राप्त करें एवं परम तत्त्व को प्राप्त करने के पश्चात् वह स्वयं पर उसका परीक्षण करें एवं समाज हेतु उस दिशा में कार्य करें जिसकी समाज को आवश्यकता है। अर्थात् जब शिक्षा ग्रहण करें तो उसमें ज्ञान, ध्यान, विद्या, चरित्र, व्यवहार व संस्कारों की ऐसी स्थापना हो जिससे समाज में उसकी प्रतिष्ठा प्रतिस्थापित हो।

अध्ययन, ज्ञान, संस्कार इन विषयों पर बल देना इसलिए आवश्यक हो जाता है कि इन विषयों में वर्तमान समय में विद्यार्थी अपनी संस्कृति एवं संस्कारों से काफी दूर होने लगा है। उदाहरण स्वरूप अपने से बड़ों का सम्मान पूर्वक अभिवादन करना, चरण स्पर्श करना, भाषा में विनम्रता रखना, किस स्थान पर कैसे शब्दों का प्रयोग करना, छोटों के प्रति प्रेम, स्नेह व सौहार्द रखना सबसे महत्त्वपूर्ण अपने माता-पिता, गुरुजनों के प्रति विशिष्ट आदर्श मान-सम्मान की भावना रखना इत्यादि।

इन बातों पर बल देना इसलिए आवश्यक है कि हम पाश्चात्य संस्कृति के इतने पश्चगामी होने लगे हैं कि शिक्षा अध्ययन तो कर रहे हैं परंतु पाश्चात्य संस्कृति की भीड़ में अपने संस्कारों को खोते जा रहे हैं। अतः हर विद्यार्थी को अपने विषय अध्ययन के साथ-साथ अपनी संस्कृति पर आत्ममंथन करते हुए ज्ञान की ओर कदम बढ़ाने चाहिए जिससे हमारी शिक्षा सफल हो सके।

महावीर कोठारी
सदस्य, प्रबन्ध समिति

आई.ए.एस. बनने वाली पहली दृष्टिहीन महिला हैं-प्रांजल

अगर हौसला हो तो हर उड़ान मुमकिन है ये साबित किया है प्रांजल ने। प्रांजल पाटिल देश की पहली नेत्रहीन महिला आई.ए.एस. अफसर हैं। प्रांजल पाटिल ने तिरूवनंतपुरम में सब कलेक्टर के तौर पर पदभार संभाला। महाराष्ट्र के उल्हास नगर की निवासी प्रांजल केरल कैडर में नियुक्त होने वाली पहली दृष्टि बाधित आई.ए.एस. अफसर हैं। पाटिल की दृष्टि जन्म से ही कमजोर थी लेकिन छः साल की उम्र में उनकी दृष्टि पूरी तरह से खत्म हो गई। लेकिन इससे प्रांजल ने हिम्मत नहीं हारी। जीवन में कुछ करने की लगन थी। प्रांजल आगे बढ़ती रहीं। उन्होंने अपने पहले ही प्रयास में यू.पी.एस.सी. की सिविल सेवा परीक्षा में 773वीं रैंक हासिल की थी।

प्रांजल की पढ़ाई मुंबई के दादर में श्रीमती कमला मेहता स्कूल से हुई। ये स्कूल प्रांजल जैसे खास बच्चों के लिए था। यहाँ पढ़ाई ब्रेल लिपि में होती थी। प्रांजल ने यहाँ से 10वीं तक की पढ़ाई की फिर चंदाबाई कॉलेज से आर्ट्स में 12वीं की जिसमें प्रांजल के 85 फीसदी अंक आए। बी.ए. की पढ़ाई के लिए प्रांजल मुंबई के सेंट जेवियर कॉलेज पहुँची। प्रांजल ने स्थानीय मीडिया से कहा कि मैं पूरी ईमानदारी से अपना काम करूँगी। इंसान को कभी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। आप जो सोचें वो पूरा हो सकता है लगन होनी चाहिए। बी.ए. करने के बाद प्रांजल दिल्ली पहुँची और जे.एन.यू. से एम.ए. किया।

प्रांजल जब सिर्फ छः साल की थी तब उनके एक सहपाठी ने उनकी एक आँख में पेंसिल मारकर उन्हें घायल कर दिया था। उसके बाद प्रांजल की उस आँख की दृष्टि खराब हो गई थी। उस समय डॉक्टरों ने उनके माता-पिता को बताया था कि हो सकता है भविष्य में प्रांजल अपनी दूसरी आँख की दृष्टि भी खो दे और ऐसा हुआ भी। कुछ समय बाद प्रांजल की दोनों आँखों की दृष्टि चली गई लेकिन प्रांजल ने जो कर दिखाया है वो अनगिनत लोगों के लिए एक मिसाल है, एक गर्व है।

जयश्री अग्रवाल
सदस्य, प्रबन्ध समिति

शिक्षा व ज्ञान प्राप्ति के क्षेत्र अनंत

हम अक्सर विद्वानों से यह सुनते हैं कि शिक्षा एवं ज्ञान प्राप्ति की कोई उम्र नहीं होती। हर क्षेत्र, हर स्थान हमें कुछ ना कुछ अवश्य सिखाता है। यदि हम समय, स्थान, क्षेत्र विशेष, व्यक्ति विशेष को महत्त्व देंगे तो निश्चित ही हम वहाँ से अवश्य ज्ञान रूपी तत्त्व को प्राप्त करने में सफलता अर्जित करेंगे। इस बात की पुष्टि या उदाहरण को समझने का प्रयास करें तो महाभारत इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। यदि हम महाभारत की उस घटना का स्मरण करें जो कुरुक्षेत्र में युद्ध से ठीक पूर्व अर्जुन के साथ घटित हुई। उस समय अपने परिजनों को युद्ध भूमि में अस्त्र-शस्त्र सहित सम्मुख पाया तो अपने अंतर्मन से अत्यन्त विचलित होकर अपने सारथी एवं साथी श्रीकृष्ण से कहा कि अब मैं अपने ही परिजनों पर अस्त्र-शस्त्रों से प्रहार कैसे करूँ? जिन हाथों ने मुझे आशीर्वाद दिये, जिन्होंने मुझे गोद में उठाया क्या मैं उनके ऊपर तीर चलाऊँ? कुरुक्षेत्र में इस हतोत्साह को देखकर श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा यदि इस रणभूमि में तुम तीर नहीं चलाओगे तो वे तुम पर चलायेंगे एवं तुम युद्ध हार जाओगे। यदि युद्ध जीतना चाहते हो तो तुम्हें उत्साह के साथ युद्ध करना ही होगा! रणभूमि में भी हमें ऐसी शिक्षा मिल सकती है यह हम नहीं हमारे ग्रंथ कहते हैं।

इसी युद्ध में हमें एक सीख यह भी मिलती है कि यदि हम अभिमन्यु की भाँति चक्रव्यूह में प्रवेश करने का ज्ञान तो रखें परन्तु उस चक्रव्यूह से बाहर निकलने का ज्ञान प्राप्त न करें तो युद्ध हारना निश्चित हो जाता है। मेरा ऐसा मानना है कि हमारे ग्रंथों में ऐसे अनंत ज्ञान सामाहित है। अवसर प्राप्त कर इस अनंत ज्ञान को हमें ग्रहण करते हुए अनुभूत करना चाहिए। इसी से हमें हमारी सभ्यता एवं संस्कृति का यथा संभव ज्ञानप्राप्त हो सकता है।

डॉ. रवि शर्मा
प्राचार्य

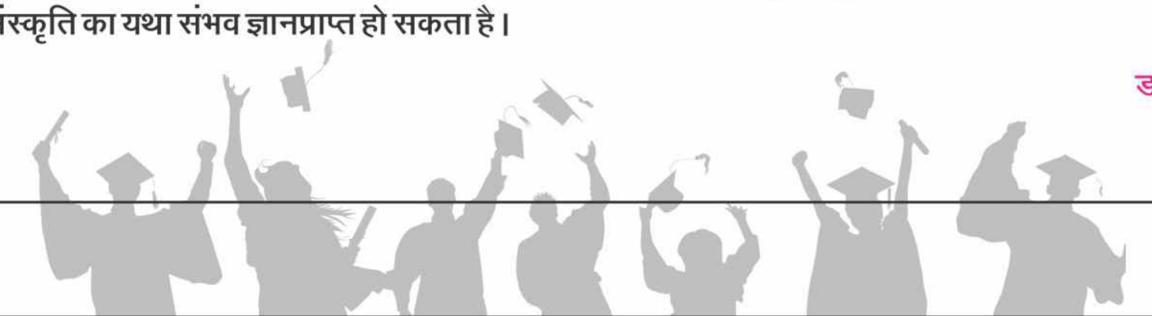

शिक्षा और संस्कृति एक सेतु

एक शिक्षक परिवार के सदस्य होने और स्वयं भी इसी पेशे में लगभग 20 वर्षों से कार्यरत होने से विद्यार्थियों की मनः स्थिति, व्यवहार, गुण-दोष इत्यादि का सटीक अनुमान मैं बहुत कुछ लगा सकता हूँ। वस्तुतः हर शिक्षक अपने विद्यार्थियों को अच्छी तरह से समझता है। आज इसी संदर्भ में कुछ शब्दों को जोड़ने का प्रयास कर रहा हूँ।

शिक्षा और संस्कृति एक दूसरे से एक पुल की तरह जुड़ी हुई है दोनों एक दूसरे के बिना अधूरी हैं। भारतीय समाज और चिंतन में संस्कृति एक आधारशिला है जिसके हिलने मात्र से समाज में अनावश्यक एवं निरर्थक बातें होने लगती है। भारतीय संस्कृति विश्व संस्कृति में सर्वोच्च है जिसके प्रमाण की कोई आवश्यकता नहीं है। जहाँ विविधता में एकता, धर्मनिरपेक्षता, वसुधैव कुटुंबकम, आपसी भाईचारा रग-रग में बसा हो वह तो सर्वश्रेष्ठ होगी ही। शिशु जब जन्म लेता है तो सबसे पहले अपनी माँ को महसूस करता है और माँ के विभिन्न उद्दीपन के प्रति अपनी प्रतिक्रिया देने लगता है। इनके जन्म से पूर्व ही माता-पिता स्वप्न देख लेते हैं कि यह बड़े होकर डॉक्टर, इंजीनियर, आर्किटेक्ट, कलेक्टर, पायलट बनेंगे और इसकी रूपरेखा तैयार करने लग जाते है। माता-पिता में ऐसा होना स्वाभाविक है। जन्म लेने के बाद संस्कृति का पहला पाठ विद्यार्थी को घर से ही मिलता है। छोटा बच्चा जैसा देखता है, उसी का अनुकरण भी करता है। वह सोचता है जो मुझे दिख रहा है वही सही है चाहे वह गलत देख रहा हो। इसलिए परिवार के सभी सदस्यों को छोटे बच्चों के सामने सुसंस्कृत व्यवहार ही दिखाना चाहिए ताकि उसके मस्तिष्क पर सकारात्मक और अच्छे संस्कारों की छाप पड़े। यही संस्कार आगे चलकर बच्चा दूसरों के साथ साझा करता है। बच्चा बड़ा होकर स्कूल और महाविद्यालय में भी अपने संस्कारों को याद रखता है और उन्हें अनुशासित होकर अपने आसपास के परिवेश में लागू करता है, शिक्षण संस्थाओं में छात्र-छात्राओं को संस्कार देने का कार्य शिक्षक का है। शिक्षक उन सभी को अच्छे संस्कार देने के लिए कटिबद्ध है और उसका यह दायित्व बनता है कि पाठ्यक्रम के अलावा सभी छात्र-छात्राओं में अच्छे संस्कारों के बीज बोयें एवं विकसित करे।

आज हमारे प्रत्येक विद्यार्थी में यह संस्कार होना चाहिए की वे अपने गुरुजनों का आदर करें, अपने साथियों का सम्मान करें एवं हर वह वस्तु जो अव्यवस्थित हैं उसे स्वतः व्यवस्थित करने का अनुशासन स्थापित करें।

विश्वजीत जारोली
विभागाध्यक्ष, प्राणी शास्त्र विभाग

शिक्षा एवं संस्कृति

शिक्षा और संस्कृति एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। हमारे भारतीय समाज में शिक्षा के माध्यम से ही संस्कृति की पहचान होती है। हमारा भारत अलग-अलग संस्कृति से जाना जाता हैं। शायद यह पहला देश, जिसमें विविध प्रकार के लोग अलग-अलग जाति, धर्म के लोग यहाँ रहते हैं। जैसे यदि में जैन धर्म की बात करूँ तो उसका भी अपना एक इतिहास है। जैन धर्म हमें न केवल अहिंसा व सत्यता की बात बताता है अपितु हमारी संस्कृति के बारे में सिखाता है और शिक्षा के माध्यम से ही हम हमारी संस्कृति को बता या दिखा सकते हैं। संस्कृति से तात्पर्य है किसी भी क्षेत्र या जगह में खान-पान, रहन-सहन, बोलचाल आदि को प्रदर्शित करना और यह सब संभव है तो शिक्षा के माध्यम से यदि हमें किसी भी संस्कृति के बारे में शिक्षा ही नहीं होगी तो हम अपनी सस्कृति को कैसे बता पायेंगे ? अर्थात् भारतीय समाज में अलग-अलग राज्य में भिन्न-भिन्न प्रकार की बोलियाँ, भाषाएँ एवं धर्म है और हमें इन सभी का ज्ञान होने के लिए शिक्षा प्राप्त करना अति आवश्यक हैं। हमारे भारत के अलग-अलग राज्य जैसे-राजस्थान, पंजाब, गुजरात आदि जगह अपना रहन - सहन, खान - पान व बोलियाँ अलग-अलग हैं जो अन्य किसी देश में हमें देखने को नहीं मिलता। यह हमारा सौभाग्य हैं कि हम भारत जैसे देश में रहते है और हमे गर्व भी होना चाहिए कि हम विभिन्न प्रकार की संस्कृति वाले राष्ट्र में रहते हैं। शायद इसलिए ही भारत देश को सब "राष्ट्रीय एकता" वाला देश कहते हैं।

जय हिन्द जय भारत

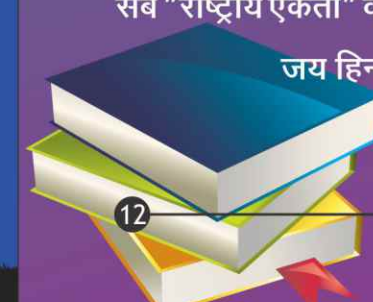

कोमल जैन
द्वितीय वर्ष, कला संकाय

धरती लहराएगी फसलों के साथ

युद्ध किसके लिए केवल जिद के लिए,
फिर क्यों न हर तानाशाह अपने ही आस-पास रचता युद्ध।
उस युद्ध का क्या मतलब जो जनता पर बम गिराते हैं
स्त्री-पुरुष बच्चे बजुर्ग सब-चीखते हैं,
युद्ध की भयावहता में यह सब अपने
अहं के लिए इतना काफी है युद्ध के लिए।
अब तो अपनी सत्ता और सीमा से बाहर जो कुछ है
सब का सब्र युद्ध की आग में झोंक दिया गया है,
युद्ध की टीस और युद्ध के रिसते घाव बजबजा रहे होंगे।
थोड़ी देर उम्मीद का बच्चा रोने के बाद,
नये सिरे से दुनिया के लिए प्रेम का बीज उगाएगा
और धरती फिर लहराएगी फसलों के साथ।

कनक पारीक
तृतीय वर्ष, विज्ञान संकाय

कागज और कलम

एक दिन कोरे कागज ने
कलम से की शिकायत
यों इतरा के चलने की
क्यों है तुम्हारी आदत
स्पर्श तुम्हारा है कठोर
उस नश्तर की भाँति
जिसे चुभा कर तुम
करते हो मेरी छलनी छाती,
कलम का जवाब सर के बल चलकर मैं सज़दा तेरे करता हूँ
अपना खून जला कर दामन तेरा करता हूँ
तेरे वजूद के खातिर उंगलियों में पीसता हूँ
तू कोरा ना रह जाए इसलिए स्वयं को घिसता हूँ।

निशा राजपुरोहित
तृतीय वर्ष कला संकाय

ऑनलाइन शिक्षा

शिक्षा शब्द आते ही हम सभी के मन में एक ही विचार आता है कि "अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों के समक्ष ज्ञान प्रदान करना" परंतु वर्तमान में यह स्थिति लगभग बदल चुकी है और इसका मुख्य कारण दुनिया में फैली वैश्विक महामारी है इसके कारण एक नई शिक्षा प्रणाली प्राप्त हुई है जो कि ऑनलाइन शिक्षा है। ऑनलाइन शिक्षा का अर्थ है कि कोई भी व्यक्ति दुनिया के किसी भी स्थान से शिक्षा ग्रहण कर सकता है उसे शिक्षा ग्रहण करने के लिए कहीं अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं है। वर्तमान में ऑनलाइन क्लासेज से आप कोई भी डिग्री को हासिल कर सकते है। ऑनलाइन शिक्षा के कारण आज हम भविष्य की नई ऊँचाइयों पर बढ़ रहे हैं। आज ऑनलाइन शिक्षा के कारण अध्यापक विद्यार्थियों को घर बैठे ही पढ़ा सकते हैं। करोड़ों लोग आज इस शिक्षा का उपयोग कर रहे हैं तथा आने वाले समय में यह ऑनलाइन शिक्षा और अधिक बढ़ेगी। भारत में ऑनलाइन शिक्षा 2 वर्ष पूर्व इतनी नहीं थी किंतु कोरोना महामारी के कारण जब सभी शिक्षण संस्थान बंद कर दिए गए तब ऑनलाइन शिक्षा का महत्त्व बहुत अधिक बढ़ गया। वर्तमान में ऑनलाइन शिक्षा नीति का इतना बढ़ने का मुख्य कारण यह था कि आर्थिक दृष्टि से कमजोर व्यक्ति भी आसानी से शिक्षा ग्रहण कर सकता है इसके अलावा इससे न केवल किताबी ज्ञान ले सकते हैं बल्कि कौशल के बारे में भी सीख सकते हैं। वर्तमान में ऑनलाइन शिक्षा हम सभी के लिए एक वरदान साबित हुई है।

सोनू यादव
तृतीय वर्ष, विज्ञान संकाय

आधुनिक शिक्षा

शिक्षा का वास्तविक अर्थ होता है, कुछ सीखकर अपने को पूर्ण बनाना। इस दृष्टि से शिक्षा को मानव जीवन की आँख भी कहा जाता है। वह आँख जो मनुष्य को जीवन के प्रति सही दृष्टि प्रदान कर उसे इस योग्य बना देती है कि वह भला बुरा सोच कर समस्त प्रगतिशील कार्य कर सकें पर क्या आज विद्यार्थी जिस प्रकार की शिक्षा पा रहा है, शिक्षा प्रणाली का जो रूप जारी है यह सब कर पाने में समर्थ है? उत्तर निश्चित ही नहीं।

माना कि समय बहुत बदल गया है। गूगल नॉलेज में अहम चला गया है। कौन देता है तवज्जों अब उन्हें भी, गुरुजी ! यूं तो पुराने जमाने का एहसास होगा गुरु की समझाए से हर मुश्किल का सरल आभास होगा। जिनकी निगाहों में सख्ती, दिल में नरमी, गुरु बिन ज्ञान नहीं। ना बांधों, पाश्चात्य की दिखावी बेडियों से खुद का, ना रहेंगे मूल्य सुरक्षित विकास तो होगा पर गुरु बिन अर्जुन, एकलव्य का इतिहास नहीं होगा।

आयुषी जोशी
तृतीय वर्ष, विज्ञान संकाय

नई शिक्षा नीति

नई शिक्षा नीति का उद्देश्य हमारे भविष्य और आने वाली पीढ़ी की सोच पर निर्भर है। इस नई शिक्षा नीति से हम किसी भी भाषा में विषय का चयन कर सकते हैं इसका मुख्य उद्देश्य मानव कौशल विकास करना और हमारे देश को एक बहु भाषा ज्ञान प्रदान करना है। हम बिना किसी दबाव के अपनी भाषा या जिस भी भाषा में हम चाहे विषय का चयन कर सकते हैं।

यह नई शिक्षा नीति हमारी पूर्व शिक्षा नीति पर ही आधारित है परंतु इसमें कुछ नए बदलाव किए गए हैं और हम यह भी कह सकते हैं कि यह हमें आधुनिक शिक्षा की ओर ले जाने का कार्य करती है। यह नीति हमारे सुब्रमण्यम समिति के रिपोर्ट पर आधारित है। इसका नेतृत्व इसरो के पूर्व अध्यक्ष डॉक्टर के. कस्तूरीरंगन की सलाह पर हुआ है। यह नीति हमारे मुख्य रूप से कौशल विकास पर कार्य करेगी और हमारे देश को एक नई सोच और बहु भाषा ज्ञान प्रदान करेगी।

शिवानी बिलोची
तृतीय वर्ष, विज्ञान संकाय

शिक्षा एवं संस्कृति का परस्पर सम्बन्ध

जिन्हें भारत की संस्कृति और विरासत पर गर्व होता है उन्हें यह ध्यान देना चाहिए कि उस सांस्कृतिक विरासत का भारत के भविष्य निर्माण में कैसे उपयोग किया जाए - श्री अरविन्दो

अपने स्वर्णिम इतिहास पर गर्व करना एक अच्छी बात है परंतु सांस्कृतिक विरासत को सहेजना और भविष्य के लिए उस विरासत का समुचित उपयोग करना और भी महत्त्वपूर्ण है भारत के संविधान की धारा 29 में यह अपनी भाषा लिपि एवं सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करने का अधिकार भी दिया गया है। हजारों वर्षों की हमारी धरोहर हमारी संस्कृति ही है जिसको आज वर्तमान शिक्षा पद्धति का अभिन्न अंग बनने की आवश्यकता है। नयी शिक्षा नीति के अंतर्गत यह करने का प्रयास किया जा रहा है कि अनेक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोग हजारों वर्षों तक भारत में समय-समय पर आते रहे शक, कुषाण, हूण, किंतु सभी यहाँ की संस्कृति और समाज में इस तरह मिल गए कि आज उनकी एक तरफा पहचान उपलब्ध परवर्ती काल व आर्य द्रविड़, चीनी, सिथियन, अफगान, पठान, मुगल भी आते रहे किंतु हमने अपनी विरासत को अक्षुण्ण बनाये रखा। संविधान की धारा 49 सांस्कृतिक धरोहर संबंधित भवनों और महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक भवनों की सुरक्षा का अधिकार भी दिया गया है। भारतीय पुरातत्व विभाग इसी प्रावधान के अंतर्गत राष्ट्रीय घोषित धरोहरों की संरक्षा एवं सुरक्षा करता है। संस्कृति संक्षिप्त में सामाजिक व्यवहार और मानव संस्कृति की धरोहर ही है। मानव विज्ञान इसी धरोहर का ऐतिहासिक अध्ययन है। किसी भी संस्कृति की परिभाषा उसकी कला, संगीत, नृत्य, संस्कार और धर्म व आस्था ही है। इसी के साथ-साथ परम्परा समाज के स्थापित व मूल्य और उनका संधारित ज्ञान ही संस्कृति कहलाता है।

भारत के विभिन्न पाठ्यक्रमों में इस धरोहर को उचित स्थान दिया जा रहा है। बहु सांस्कृतिक विरासत की भूमि भारत में इसकी धरोहर की आपसी मेल मिलाप और सह अस्तित्व की धारणा से रक्षा की जा रही है। भारत की कला एवं सौंदर्य शास्त्र विश्व की धरोहर माना गया है तथा संयुक्त राष्ट्र संघ भी इस धरोहर की रक्षा में नियमित सहयोग प्रदान करता है। पारम्परिक विश्वास, समाहित मानदण्ड, धार्मिक व आध्यात्मिक मान्यताएँ तथा समाहित सामाजिक कार्य भी इसी अध्याय में संरक्षित हैं। कला की परिभाषा में दृश्य श्रव्य मूर्ति कला, ललित कला, रेखाचित्र, संगीत, नृत्य कला सभी समाहित है। संरक्षण का सतत् प्रयास संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार कर रहा है जिसकी सम्पूर्ण जानकारी हमारे विद्यार्थियों को होनी चाहिए। नई शिक्षा नीति इस बिंदु पर बाद काम कर रही है। सभी समाज की पहचान उसकी संस्कृति विरासत ही होती है चाहें वह रोमन और यूनानी हो या मेक्सिको की माया संस्कृति मिस्र या चीन की सांस्कृतिक विरासत हो या भारत की वैदिक संस्कृति। हमें इस पर गर्व ही नहीं करना वरन आगे बढ़ाना है और आज के युवा वर्ग को उसकी विस्तृत जानकारी देना भी आवश्यक है। राष्ट्र क्या है, जहाँ लोग संस्कृति आदिवासी समूह निवास करते हैं उनकी संस्कृति ही उनकी धरोहर है जो राष्ट्र का निर्माण करती है। उनका सामान्य इतिहास भाषा, खानपान, रहन सहन और भौगोलिक क्षेत्र ही राष्ट्र का निर्माण करने के आवश्यक घटक हैं।

डॉ. रूचि मिश्रा
विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग

वर्दी

आ लेके चलूँ तुझे उस जहां में
जहां से भरे एक आसमाँ में
इतना ऊँचा है मंजर जहाँ
गगन भी कंपकपाता है
जब सवाल देश की हिफाजत का हो
तो जिम्मा हम सब पर आता है
कोई आँख उठा कर तो देखे
कसम हमे अपनी वर्दी की
उस मिट्टी को सर से लगायेंगे
उस तिरंगे की लहरा कर आयेंगे
उसे अपने ऊपर लपेटकर आयेंगे
अपने लहू से इतिहास
हम खुद बनायेंगे।
जय हिन्द

नंदिनी जांगिड़
तृतीय वर्ष, विज्ञान संकाय

बेटियाँ एवं भारतीय ग्रामीण शिक्षा

भारत माता ग्रामवासिनी है। भारत की 75 प्रतिशत जनता गाँवों में रहती हैं। गाँधीजी कहते हैं! अगर आपको भारत के असली दर्शन करने हैं तो आपको गाँव जरूर जाना चाहिए क्योंकि हमारे देश की आत्मा गाँवों में बसती है। भारत के गाँव भारत के शहरों के मुकाबले छोटे जरूर है लेकिन ज़िंदगी का असली आनंद वहीं पर आता है क्योंकि जो प्रकृति का सौंदर्य हमें गाँव में देखने को मिलता है वह और कहीं नहीं है। कहते हैं कि भारत के गाँवों में स्वर्ग है। परंतु स्वर्ग तो वहाँ होता है जहाँ शांति का वातावरण हो जहाँ ज्ञान की बात हों। परन्तु गाँव में प्रतिदिन वाद-प्रतिवाद भी होते रहते हैं। इसका कारण दूसरे की कहीं फसल अपने खेत में डाल देना, दूसरे की हरे-भरे खेतों में अपने पशु छोड़ देना। यह सब अशिक्षा के कारण होता है।

इसलिए भारत के प्रत्येक गाँव में विद्यालय होने चाहिए और उसमें बेटे-बेटी दोनों को पढ़ाना चाहिए। लेकिन आज भी गाँवों में बेटियों को नहीं पढाया जाता है और अगर पढ़ा भी देते हैं तो 12वीं तक इससे आगे का तो सोच भी नहीं सकते और अगर कोई लड़की पढ़ना चाहती है तो गाँव के लोग अलग-अलग ताने देते है आखिर घर का काम ही तो करना है जिससे कि वह लड़की पढ़ नहीं पाती और उसकी शादी करवा कर ससुराल भेज देते हैं। हालांकि अब इसमें शैक्षिक सुधार हो रहा है फिर भी सोचें कि यदि गाँव में यही स्थिति रहती है तो क्या इस ग्रामवासिनी भारत का विकास हो पाएगा! क्या हमारी बेटियाँ उन्नति कर पाएगीं।

रेन्या देवी - प्रथम वर्ष, कला संकाय

गणित को सरलता से समझना चाहिए

गणित जिसके मूल सिद्धांत दैनिक जीवन में सीधे संबंध रखते हैं फिर भी विद्यार्थियों में गणित का नाम सुनकर एक अजीब सा भय उत्पन्न हो जाता है। गणित के मूल तथ्यों को भली-भाँति समझ ना पाने के कारण विद्यार्थियों के लिए गणित जीवनभर एक सिर दर्द बना रहता है। गणित के प्रति अरुचि विद्यार्थियों को कभी-कभी मानसिक रूप से अवसाद में पहुँचा देती है। ऐसी कोई भी नौकरी नहीं जो गणित की प्राथमिक योग्यता नहीं माँगती हो। गणित बच्चे को मानसिक और तार्किक रूप से मजबूत बनाने का कार्य करती है। इसलिए आज बहुत जरूरी है कि हमारे देश की युवा पीढ़ी गणित को रूचि के साथ समझे और सीखने की कोशिश करे। आज की पारंपरिक कक्षा के सामने शिक्षक व्याख्यान करता है, छात्र नोट्स लिखते है और फिर शिक्षक कहते हैं कि सभी सूत्र कल तक याद हो जाने चाहिए और फिर छात्र सूत्रों को याद करने की कोशिश करते हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था बदलनी चाहिए। छात्र को सूत्र याद नहीं करना चाहिए बल्कि उन्हें समझते हुए प्रायोगिक स्वरूप में लागू करना चाहिए। उन्हें गणित को बहुत गहराई से समझने की कोशिश करनी चाहिए और उन्हें सूत्रों या किसी विषय के इतिहास के बारे में जानने की कोशिश करनी चाहिए। गणित को बहुत ही रचनात्मक और दिलचस्प तरीके से समझे और उसे वास्तविक जीवन से जोड़े। विद्यार्थियों को केवल परीक्षा उपयोग करने के लिए गणित नहीं सीखनी चाहिए बल्कि उसे जीवन में उतारते हुए जैसे एक गायक गाते वक्त पूरी तरह उस गीत में बह जाता है ठीक उसी तरह एक विद्यार्थियों को भी गणित रुपी समुंद्र में तैरना सीख जाना चाहिए।

दुर्गा हरिसिंह चुंडावत - द्वितीय वर्ष, विज्ञान संकाय

शिक्षा और संस्कृतिः व्यापक अन्तर्सम्बन्ध की समझ की आवश्यकता

शिक्षा और संस्कृति को एक दूसरे का पूरक कहा जाना चाहिए अर्थात् शिक्षा सदैव और सर्वत्र मानव संस्कृति का अभिन्न अंग है, इसीलिए शिक्षा संस्कृति के अस्तित्व और स्थानान्तरण में प्रभावी भूमिका अदा करती है। इस विषय में जाने माने शैक्षिक समाजशास्त्री ओटावे ने ठीक ही कहा है कि शिक्षा का एक कार्य समाज के सांस्कृतिक मूल्यों और व्यवहार के प्रतिमानों को उसके तरुण और समर्थ सदस्यों को हस्तान्तरित करना है। इस प्रकार शिक्षा और संस्कृति का अन्तर्सम्बन्ध व्यापकता को प्रतिबिम्बित करता है। वस्तुतः जन्म से लेकर विकास की प्रत्येक आयु में हम कुछ न कुछ सीखते जाते हैं, यह शिक्षा ही है और चूँकि वह हमारे समाज और सामाजिक व्यवस्था के निर्माण का सशक्त आधार तैयार करती है, इसीलिए यह भी कहा जाना चाहिए कि शिक्षा हमारी संस्कृति को रेखांकित, प्रचारित और परिमार्जित भी करती है। हम इस बात को इस तरह से भी कह सकते हैं कि शिक्षा कैसी होगी, यह उस विशिष्ट प्रदेश और समाज की संस्कृति पर निर्भर करता है जहाँ शिक्षा प्रदान की जा रही है। यहाँ हमें अरस्तु के विचार को भी रेखांकित करना चाहिए जो कि मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी कहते हैं अर्थात् मनुष्य की पहचान उसके सामाजिक होने पर निर्भर करती है। इसका अर्थ है कि मनुष्य के लिए शिक्षा का महत्त्व उसे सामाजिक प्राणी बनाने और उसी के अनुरूप संस्कृति की पालना से परिचित कराने से भी जुड़ा है। शिक्षा के अनौपचारिक पक्ष के माध्यम से व्यक्ति को परिवार, पड़ोस, नातेदार, मित्र और अन्य हिस्सों से सामाजिक प्रतिमानों, मूल्यों और व्यापक अर्थ में संस्कृति से रूबरू कराया जाता है, उसी के अनुरूप उसे सही और गलत के बीच विभेद की शिक्षा दी जाती है। दूसरी ओर शिक्षा के औपचारिक पक्ष के माध्यम से विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के माध्यम से भी शिक्षा और संस्कृति के अन्तर्सम्बन्धों से अवगत कराया जाता है। सही मायने में हम जो कुछ सीखते है वह एक दायरे से युक्त है और वह दायरा हमारी संस्कृति ही प्रदान करती है। इस प्रकार उपर्युक्त व्याख्या के संदर्भ में संस्कृति की शिक्षा की अवधारणा उचित और सारगर्भित प्रतीत होती है। शिक्षा ही संस्कृति और संस्कृति ही शिक्षा है। शिक्षा संस्कृति के अनुरूप व्यक्ति में चरित्र और मूल्यों का विकास भी करती है। शिक्षा और संस्कृति के अन्तर्सम्बन्धों के सम्बन्ध में यह आदर्शात्मक और सैद्धान्तिक अभिव्यक्ति है।

यह पुनर्विचार का विषय है यदि शिक्षा और संस्कृति एक दूसरे के साथ समन्वय से जुड़ी है तो फिर सामाजिक व्यवस्था में अव्यवस्था के तत्त्व क्यों हावी होते दिखायी देते हैं। बदलाव के क्रम में समाज आधुनिकता की सीमा रेखा से आगे उत्तर-आधुनिकता के दौर में पहुँच गया है, ऐसे में हमें यह सोचना होगा कि हम किस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करना चाहता है। यदि शिक्षा के औपचारिक और अनौपचारिक पक्ष अपनी प्रभावी भूमिका अदा कर रहे हैं तो फिर प्रेम, अपनत्व, सहयोग, सामूहिकता और मानवीयता के साथ अपराध, वैमनस्य, हिंसा, व्यक्तिवादिता और अमानवीयता का वातावरण क्यों विकसित हो रहा है। वस्तुतः यह समझना होगा कि हम क्या सीख रहे है और उससे किस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था का निर्माण हो रहा है। जिस प्रकार की परिस्थितियाँ सामाजिक परिवेश में विद्यमान है, उस आधार पर शिक्षा से क्या व्यक्ति भौतिक और अभौतिक संस्कृति के अन्तर को समझ पा रहा है और व्यापक अर्थ में क्या परम्परा

और आधुनिकता में सामंजस्य स्थापित कर पा रहा है। इतने सवालों के बीच यह समझना भी आज की आवश्यकता है कि क्या शिक्षा हमें हमारी संस्कृति के प्रति गौरवान्वित महसूस करने में योगदान दे रही है? यदि इस सवालों के पूर्ण जवाब हमारे पास नहीं है तो इसका अर्थ है शिक्षा और संस्कृति के सम्बन्ध की पूनाख्या करना जरूरी है।उपर्युक्त व्याख्या के आधार पर निम्नांकित विमर्श प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

- शिक्षा स्वयं की संस्कृति को प्रोत्साहित और दूसरों की संस्कृति को हतोत्साहित करने की मानसिकता (नृजातिकेन्द्रीयता) से सभी को मुक्त करे।
- शिक्षा के माध्यम से भिन्नता को स्वीकार करने (सांस्कृतिक सापेक्षवाद) और उसी के अनुसार सभी में अपनी भिन्न संस्कृति को मानने और उससे जुड़ी परम्पराओं और लोकाचारों की पालना आजादी की समझ स्थापित की जाए।
- शिक्षा समन्वयकारी दृष्टिकोण का विकास करें ताकि समाज में व्याप्त विमूल्यों की समाप्ति और मूल्यों की व्यवस्थित स्थापना पर जोर दिया जाए।
- भारतीय समाज बहुलवादी संस्कृति को स्वीकार करता है तो इसी के अनुरूप शिक्षा और संस्कृति के समन्वय की वकालत की जानी चाहिए।
- संस्कृति जन्मजात विशेषताओं को नहीं अपितु अर्जित विशेषताओं को प्रतिविम्बित करती है जो कि सीखी जाती है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरित होती है। शिक्षा का उद्देश्य इस विचार को रेखांकित करने से जुड़ा होना चाहिए।
- शिक्षा के माध्यम से परम्परा और आधुनिकता के समन्वय पर गंभीरता से चर्चा की जाए ताकि परम्पराओं को संजोया जा सके और वैश्विक परिदृश्य के अनुरूप आधुनिकता की आवश्यकता को भी समझा जाए।
- शिक्षा के सांस्कृतिक उद्देश्य के अनुरूप शिक्षा के औपचारिक और अनौपचारिक पक्षों के माध्यम से शिक्षा और संस्कृति के सम्बन्धों को रेखांकित किया जाए।

निःसंदेह शिक्षा और संस्कृति के अन्तर्सम्बन्ध की व्यापक समझ से न केवल व्यक्ति बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास का मार्ग तैयार किया जा सकता है। हम सभी को यह समझना होगा कि हम आज जो कुछ भी है उसका आधार हमारी संस्कृति है और शिक्षा का यह दायित्व है कि इस भावना को बनाए रखने में अपनी प्रभावी भूमिका अदा करे ताकि सभी न केवल अपनी संस्कृति को जाने बल्कि उसका आन्तरीकरण भी कर सके।

डॉ. मितेश जुनेजा
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग

वैदिक शिक्षा

भारत में अतीत से ही वैदिक शिक्षा का प्रचलन रहा है। जिस समय विश्व में शिक्षा नाम की कोई चीज नहीं थी उस समय भारतीय समाज में वैदिक शिक्षा का प्रचलन था। वैदिक शिक्षा गुरुकुल में हुआ करती थी,शिष्य अपने गुरु के सानिध्य में रहकर शिक्षा प्राप्त किया करते थे। यह शिक्षा ना केवल सामाजिक थी बल्कि अस्त्र-शस्त्र, संगीत, राजनीति, ज्योतिष, खगोल आदि से भी जुड़ी होती थी। भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली व्यावहारिक जीवन की शिक्षा थी। शिक्षा व्यक्ति का सामाजिक व राष्ट्रीय प्रगति के लिए अनिवार्य तत्त्व है। इस तथ्य को प्राचीन भारतीयों ने भली-भाँति समझा था, इसी कारण भारतीय सभ्यता के प्रारंभिक काल से ही भारत में शिक्षा की यह व्यवस्था की गई थी। गुरु शिक्षार्थियों को अपना सानिध्य देते और शिक्षा प्रदान किया करते थे। वैदिक शिक्षा भारत की अपनी मौलिक शिक्षा व्यवस्था थी।

चित्रलेखा जाजोरिया
तृतीय वर्ष, विज्ञान संकाय

नई शिक्षा नीति और पुस्तकालय

नई शिक्षा नीति 2020 जो की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 को बदलने के लिए 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है। नई शिक्षा नीति मे पुस्तकालयों की भागीदारी और उनके दिये गए महत्त्व को निम्नलिखित बिन्दुओं में समझ सकतें है

1. **एक राष्ट्रीय पुस्तक प्रचार नीति तैयार की जाएगी**

पाठकों में पढ़ने के लिये आदत को बढ़ावा देने, पुस्तकालयों के अधिकतम उपयोग को बढ़ावा देने के लिए, सभी तरह की भाषाओं मे पाठ्य पुस्तकों और अन्य पुस्तकों उपलब्ध करवाया जायेगा और इसके साथ ही स्कूल और सार्वजनिक पुस्तकालयों मे डिजिटल पुस्तकालयों को स्थापित और विकसित किया जायेगा।

2. **मनोरंजक और प्रेरक पुस्तकों का विकास**

स्थानीय और भारतीय भाषाओं में छात्रों के लिए मनोरंजक और प्रेरणादायक पुस्तकें विकसित और उपलब्ध करवायी जाऐगी। निःशक्तजनों एवं पुस्तकों की सुलभता सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए जाऐंगे। सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के संस्थानों की मदद से किताबों की गुणवत्ता और आकर्षण में सुधार के लिए रणनीति तैयार करेगी।

3. **स्कूल और सार्वजनिक पुस्तकालयों में पुस्तकों की उपलब्धता और पहुँच बनाना**

स्कूलों और सार्वजनिक पुस्तकालयों किताबें उपलब्ध कराने पर जोर देगी। देश भर में आधुनिक आई.सी.टी. प्रौद्योगिकी का उपयोग करने वाले और विकलांग व्यक्तियों के लिए पुस्तकों की उपलब्धता और पहुँच सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए जाऐंगे।

4. **देश भर में पढ़ने की संस्कृति का निर्माण**

पाठकों को बढ़ाने के लिए सार्वजनिक और स्कूल पुस्तकालयों को व्यापक रूप से बढ़ाया जाने के लिए सार्वजनिक पुस्तकालयों को सुदृढ़ और आधुनिक बनाया जाएगा। व्यापक पठन, पाठन और सामुदायिक विकास और आमजन की सहभागिता को बढ़ाने के लिए देश भर में अधिक से अधिक बच्चों के पुस्तकालय, मोबाइल पुस्तकालय और सामाजिक पुस्तक क्लबों की स्थापना की जाएगी।

5. **उच्च शिक्षा व्यवस्था में पुस्तकालयों को मजबूत किया जाएगा**

अकादमिक पुस्तकालय संस्थानों के दिल है। डिजिटल पुस्तकालयों को बढ़ाने और पुस्तकालय पुस्तकों की ऑनलाइन पहुँच के लिए कदम उठाए जाएंगे। क्षेत्रीय भाषाओं में भी ई-कंटेंट उपलब्ध कराया जाएगा।

6. **प्रौढ़ शिक्षा के लिए सार्वजनिक पुस्तकालय स्थलों का उपयोग**

सरकार इच्छुक वयस्कों को वयस्क शिक्षा और आजीवन सीखने को सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त बुनियादी ढ़ाँचा प्रदान करने पर काम करेगी। सार्वजनिक पुस्तकालय का उपयोग आई.सी.टी. से सुसज्जित वयस्क शिक्षा पाठ्यक्रमों और सामुदायिक जुड़ाव और संवर्धन एवं अन्य गतिविधियों के लिए किया जाएगा।

7. **पुस्तकालय कर्मचारियों के लिए उपयुक्त व्यावसायिक विकास**

पुस्तकालयों को स्थापित करने, विकसित करने और सभी प्रकार के पाठकों की जरूरतों को पूरा करने के उद्देश्य को साकार करने के लिए सरकार पुस्तकालय कर्मचारियों के लिए उपयुक्त कैरियर मार्ग विकसित करेगी और उचित कामकाज के लिए पर्याप्त कर्मचारियों की संख्या का उचित प्रबंध करेगी।

डॉ. कपिल सिंह हाड़ा
पुस्तकालयाध्यक्ष

मुझे गर्व है कि मैं एक खिलाड़ी हूँ

मैं एक खिलाड़ी हूँ मैंने उसे 4 बजे उठते देखा है,
कड़ी मेहनत के साथ माथे से पैरों तक
पसीने से भीगते देखा है।

गुड़ की मिठास और चने को खाते देखा है,
स्कूल की क्लास की बैंच पर सोते हुए देखा है।
घर की हालात को बनते-बिगड़ते देखा है

आँखों में सपने लिए सोते हुए देखा है,
फटे हुए जुतों को तरकीब से सीलते हुए देखा है,
जीत के लिए लड़ते हुए देखा है।
सदी, गर्मी, बरसात, धूप,
छाँव सब एक करते देखा है,
मैं एक खिलाडी हूँ.....

अक्सर सपनों को टूटते हुए देखा है।
आँखों में आँसुओं को रोकते हुए देखा है,
ज़िंदगी में हार ना मानना पर सीखते देखा है,
वादों को सिद्दतों से निभाते हुए देखा है।

मैं एक खिलाड़ी हूँ मैने उसे 4 बजे उठते देखा है,
जीवन में बहुत सी कठिनाइयों से लड़ते हुए देखा,
हार ना मानने का सपना लिए आगे बढ़ते हुए देखा।
हमेशा उसे 4 बजे उठते देखा है।

सृष्टि असाटी
खेल प्रभारी

सभ्यता एवं संस्कृति

सभ्यता एवं संस्कृति दोनों शब्दों में गहरा अंतर्सम्बन्ध है सभ्यता शब्द हमारे जीवन में सभ्य होने का संकेत देता है वहीं संस्कृति हमारे संस्कारों से फलीभूत है। हमारे प्राचीन इतिहास को जब हम जानने का प्रयास करते हैं तब हमें किसी काल विशेष की सभ्यता का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। इसी उद्देश्य से विद्यार्थियों को सभ्यताओं का अध्ययन करवाया जाता है। इसी के माध्यम से वे सीखते हैं कि हमारी प्राचीन, मध्य एवं आधुनिक सभ्यताओं का क्या अंतर्सम्बन्ध है। अक्सर हम यह सुनते हैं कि व्यक्ति सभ्य है या समाज सभ्य है यह हमारे पुरातनता का पर्याय है।

जब सभ्यता का निर्माण होता है तभी उस सभ्यता से जुड़ाव रखने वाले लोगों की संस्कृति का प्रादुर्भाव होता है। संस्कार हमारे जीवन में हमें बहुत कुछ प्रदान करते हैं। हर व्यक्ति अपनी सभ्यता घर, परिवार एवं समाज से संस्कार ग्रहण करता है और इन्हीं संस्कारों से वह समाज में स्थान को प्राप्त करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि मनुष्य को अपने जीवन में सभ्यता का पाठ पढ़कर स्वयं में उत्कृष्ट संस्कारों की स्थापना करनी चाहिए। हमारे संस्कार ही हमारी पहचान होती है। संस्कार विहीन मनुष्य पशुत्व की भाँति प्रतीत होता है। हमें मानवीय सभ्यता में रहते हुए जीवन के हर कदम को बढ़ाना चाहिए।

जय हिन्द जय भारत!

अमित दाधीच
प्रशासनिक अधिकारी

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली एवं आधुनिक शिक्षा

वर्तमान शिक्षा प्रणाली समय के साथ विकसित हुई एवं पाश्चात्य शिक्षा जगत से प्रभावित है जो कि प्रौद्योगिकी में बदलाव एवं प्रगति से प्रभावित है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में ई-बुक, विडिओ, व्याख्यान, ऑनलाइन शिक्षा एप, विडिओ चैट एवं 3-डी आदि तकनीक शामिल है। निःसंदेह आधुनिक शिक्षा प्रणाली तकनीकी विकास के उच्चतर आयाम को हासिल कर रही है। मानव इन तकनीकी माध्यम से शान से घर बैठे हर विषय को बारीकी से सीख रहा है एवं उन्नत अनुसंधान और विकास के अनुसार शिक्षण को अपग्रेड कर रहा है। किंतु वर्तमान शिक्षा प्रणाली में व्यावहारिक पक्ष की बजाय सैद्धांतिक भाग पर जोर दिया जाता है। दूसरी तरफ गुरुकुल परंपरा में प्राचीन काल में शिक्षा का संस्कारवान एवं व्यावहारिक पक्ष मजबूत रहा है गुरुकुल वह स्थान व क्षेत्र जहाँ गुरुकुल यानी परिवार निवास करता है गुरुकुल में प्रवेश करने हेतु 8 साल का होना अनिवार्य था। 25 वर्ष की आयु तक शिक्षा प्रदान की जाती थी।

इस शिक्षा के उद्देश्य :-

1. विवेकशील एवं आत्म संयम
2. चरित्रवान
3. सामाजिक समरसता
4. मौलिक व्यक्तित्व एवं बौद्धिक विकास
5. आध्यात्मिक ज्ञान का विकास
6. ज्ञान एवं संस्कृति का संरक्षण

वर्तमान प्रणाली एवं गुरुकुल प्रणाली को एकीकृत करने की जरूरत है। हमें गुरुकुल को समझने की जरूरत है की अतीत में समाज कैसा था ? वर्तमान में गुरुकुल शिक्षा का उद्देश्य कैसे पूरा किया जावे ? गुरुकुल प्रणाली शिक्षा को जानने के लिए ही नहीं बल्कि वर्तमान शिक्षा के छात्रों को इस प्रणाली के माध्यम से शिक्षा के साथ सुसंस्कृत और अनुशासित जीवन के आवश्यक पहलुओं को पढ़ाया जाए ताकि भारत को विश्व में मानवता, प्रेम और अनुशासन की प्रेरणा मिले। बुजुर्गों, माता-पिता, शिक्षक और मानवीय समाज के प्रति सम्मान की भावना रहे जैसा कि प्रचीन काल की गुरुकुल शिक्षा में संस्कार, संस्कृति, शिष्टाचार एवं सभ्यता परिलक्षित होती है।

सुरेश कुमार शर्मा
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग

संस्कृति के संरक्षण और हस्तान्तरण में शिक्षा और शिक्षक की भूमिका

शिक्षा एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिससे इस व्यापकता और गहनता को न केवल संरक्षित किया जा सकता है बल्कि इसे नवीन पीढ़ी को हस्तान्तरित भी किया जा सकता है। इस संदर्भ में यह समझना आवश्यक है कि शिक्षा त्रिमुखी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक, विद्यार्थी और पाठ्यचर्या तीनों को ही महत्त्व दिया जाता रहा है और यह तीनों आयाम किसी न किसी रूप में शिक्षा और संस्कृति के अन्तर्सम्बन्ध को दृढ़ता प्रदान करते हैं। शिक्षा से जुड़े विविध दस्तावेज यथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, अध्यापक शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और नवीन शिक्षा नीति 2020 में भी शिक्षा और संस्कृति के प्रगाढ़ सम्बन्ध को प्रस्तुत किया गया है। यह दस्तावेज मानते हैं कि शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को देश के विभिन्न भागों में रहने वाले व्यक्तियों की विविध संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था को समझने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। साथ ही पूरी दुनिया में बढ़ती असहिष्णुता और मतभेदों को सुलझाने के लिए शांतिमय शिक्षा को हर स्तर के साथ शिक्षक प्रशिक्षक पाठ्यचर्या का भी आवश्यक अंग बनाए जाने की आवश्यकता है। दस्तावेज व्याख्या करते हैं कि भारतीय संस्कृति और दर्शन ने विश्व पर अपना प्रभाव स्थापित किया है इस दृष्टि से विविधता से परिपूर्ण संस्कृति और इसकी विशेषताओं के सम्मान को रेखांकित किया जाना चाहिए। इस प्रकार नयी शिक्षा नीति में पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र को भी भारतीय और स्थानीय परिदृश्य में संस्कृति, परम्परा, रूढ़ियाँ, भाषा, दर्शन और अन्य विविध परिप्रेक्ष्य में पुनः निर्मित करने पर जोर दिया गया है।

शिक्षा से जुड़ी नीतियाँ शिक्षकों को महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है। यह बताती है कि शिक्षक किसी भी समाज के सामाजिक-सांस्कृतिक लोकाचारों को प्रतिबिम्बित करते हैं। इस प्रकार शिक्षक की भूमिका में विद्यार्थियों को साथ रखने और मिलकर कार्य करने की भावना का विकास करना भी सम्मिलित है। इसीलिए आजकल सहयोगात्मक शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है जहाँ विद्यार्थी समूह में सीखते हैं, कठिनाईयों और चुनौतियों को साझा करते हैं और उनके समाधान भी खोजते है। यह हमारी संस्कृति को ही प्रतिबिम्बित करता है। हम यह कह सकते हैं कि शिक्षक की भूमिका एक ओर जहाँ संस्कृति के प्रसार और हस्तान्तरण से जुड़ी है तो वहीं दूसरी ओर संस्कृति के आधार पर होने वाले विभेद को समाप्त करने भी सहायक है। जैसा कि स्पष्ट किया गया है कि संस्कृति एक व्यापक अवधारणा है और इसीलिए इस नए दौर में तो स्कूल की संस्कृति या शिक्षण संस्था की संस्कृति पर भी बातचीत की जाती है जहाँ ऐसा वातावरण हो जो विद्यार्थियों को न केवल भेदभाव रहित वातावरण उपलब्ध कराए बल्कि उन्हें अपनी रूचि, योग्यता और क्षमता के अनुसार सीखने और आगे बढ़ने के गुणवत्तापूर्ण अवसर उपलब्ध कराए।

शिक्षा और संस्कृति के अन्तर्सम्बन्ध पर जितनी भी बातचीत की जाए है कम ही प्रतीत होती है। इस तरह एक की अनुपस्थिति में दूसरे के अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती है वर्तमान समय चुनौतयों से परिपूर्ण है, ऐसे में संस्कृति को शिक्षा के एक सशक्त आधारस्तम्भ के रूप में देखा जाना चाहिए जिससे न केवल चुनौतियों के समाधान खोजे जा सकेंगे बल्कि सामाजिक सुस्थिरता की नींव को भी मजबूत किया जा सकेगा।

डॉ.स्मिता पंचौली
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग

भगवत गीता एवं शिक्षा

भगवत गीता में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को युद्ध करने के लिए दार्शनिक उपदेश दिया था जो सबसे पवित्र एवं लोकप्रिय ग्रंथ है। वेदों तथा उपनिषदों में पाए जाने वाले दार्शनिक तत्त्वों का प्रकाशन गीता में किया गया है। गीता का कोई विशिष्ट दर्शन नहीं है अपितु इसमें न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा तथा वेदांत के दार्शनिक विचारों को सम्मिलित किया है। गीता अन्य ग्रंथों के अपेक्षा संक्षेप में लिखी हुई है इसके अंतर्गत वेद तथा उपनिषद की अपेक्षा शिक्षा दर्शन का स्वरुप अधिक स्पष्ट मिलता है। भागवतगीता के अंतर्गत शिक्षण के साथ-साथ परामर्श और निर्देशन को भी महत्त्व दिया गया है एवं शिक्षा के सभी घटकों के स्वरुप को प्रदान किया है। गीता, वेद तथा उपनिषदों के सारतत्त्व को प्रकट करती हैं। जिससे मुक्ति प्राप्त होती हैं। इस प्रकार शिक्षा को गीता मुक्ति का साधन मानती हैं। गीता के अंतर्गत कर्म-योग, ज्ञान-योग और भक्ति-योग तीनों को महत्त्व दिया गया है। इससे यह प्रकट होता है की शिक्षा की प्रक्रिया द्वारा संपूर्ण विकास को महत्त्व दिया जाता है। मनुष्य को सांसारिक ज्ञानकर्म करने से प्राप्त होता है और आध्यात्मिक ज्ञान ग्रहण की प्राप्ति में सहायक होता है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य को स्थितप्रज्ञः की अवस्था तक पहुँचाती है। स्थितप्रज्ञः व्यक्ति को ही मुक्ति या मोक्ष प्राप्त होता है। कर्मयोग, ज्ञानयोग तथा भक्तियोग के मिलने पर ही प्रज्ञाः प्राप्त होती है। ज्ञान और कर्म का योग ही जीवन की शिक्षा प्रणाली बनाती है जिसे सच्ची शिक्षा माना गया है। गीता में शिक्षा को जन्म-जन्मांतर तक चलने वाली प्रक्रिया माना गया है जिसका अर्थ होता है कि शिक्षा मृत्यु के साथ नष्ट नहीं होती अपितु अगले जन्म में भी लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर रहती है।

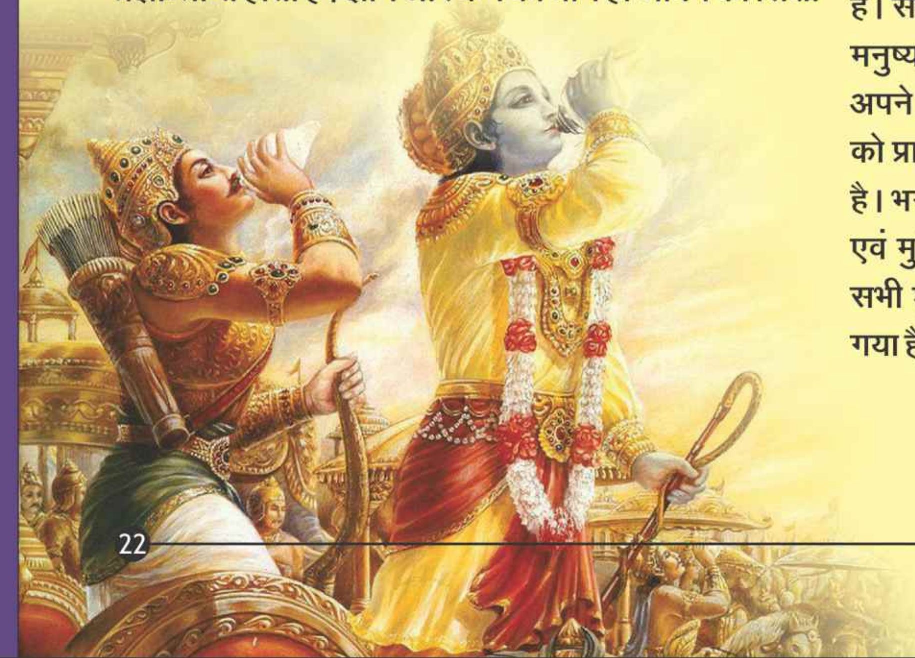

जीवन में संसार से प्राप्त होने वाले समस्त अनुभव को ज्ञान मानते हैं। इस प्रकार संसार को ही धर्म क्षेत्र, युद्ध क्षेत्र तथा अनुभव या ज्ञान की संस्था मानते हैं। मनुस्मृति में कुरुक्षेत्र को ही तपोभूमि कहा और शिक्षा को एक तप की संज्ञा दी गई है। गीता के अनुसार कुरुक्षेत्र को कर्म-क्षेत्र तथा ज्ञान-क्षेत्र भी माना गया है। गीता के अनुसार शिक्षा-स्थल उसे माना गया है जिसमें व्यक्ति कर्म करें और जीवन के अनुभव प्राप्त करें ऐसा शिक्षण संस्थान संसार ही है। भागवतगीता व्यावहारिक जीवन का प्रमुख ग्रंथ है, गीता शिक्षा को जीवन का एक पवित्र कर्म मानती है। गीता में यह कहा गया है कि मनुष्य अपने आप में व्यापक परब्रह्म को नहीं जानता। इसके जान लेने पर ही आत्मानुभूति होती है। ऐसी अनुभूति से आध्यात्मिक ज्ञान होता है। सभी जीवों में आध्यात्मिक शक्ति होती है। शिक्षा के उद्देश्य मनुष्य को परब्रह्म की अनुभूति कराना माना जाता है। मनुष्य अपने स्वभाविक कर्म द्वारा परमेश्वर को पूज कर परम-सिद्धि को प्राप्त कर लेता है। शिक्षा मनुष्य में पहले से ही निहित होती है। भागवतगीता का ज्ञान प्राप्त करने से मनुष्य मुक्त हो जाता है एवं मुक्ति की अवस्था में शरीर, मन, इंद्रियों, बुद्धि तथा कर्म सभी शुद्ध हो जाते हैं। गीता को शिक्षा का अंतिम लक्ष्य माना गया है।

डॉ.ज्योति शर्मा
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग

शिक्षा और संस्कृति के समन्वय में तकनीकी की भूमिका

वैश्विक परिदृश्य में तेजी से बदलाव हो रहा है और इस बदलाव में तकनीकी का योगदान अभूतपूर्व है। शिक्षा, रोजगार और व्यवसाय के साथ निःसंदेह संस्कृति में भी परिवर्तन स्पष्ट दिखायी देता है लेकिन बदलाव के साथ इस तथ्य को भी स्वीकार कर लेना चाहिए कि शिक्षा, रोजगार और व्यवसाय के कारण लोगों की गतिशीलता में वृद्धि हुई है। इसे सकारात्मक रूप से स्वीकार करने वाला पक्ष यह मानता है कि दुनिया में हो रहे इस बदलाव में सभी को आगे बढ़ने और विकास करने के लिए पूर्ण प्रयास करना चाहिए और अपने सुविधाजनक दायरे से बाहर निकल कर असीमित संभावनाओं को तलाशना चाहिए। इसके लिए अपने क्षेत्र और स्थान से बाहर के अवसरों को स्वीकार करना चाहिए। यहाँ सवाल यह उठता है कि अपने क्षेत्रीय और सांस्कृतिक दायरे से बाहर निकल कर भी क्या संस्कृति के साथ आत्मसात किया जा सकता है या जो सांस्कृतिक जीवन शैली जन्म के साथ हमारे व्यवहार से जुड़ी है क्या उसे संरक्षित किया जा सकता हैं और अगली पीढ़ी को हस्तांतरित भी किया जा सकता है। इस सवाल का जवाब निःसंदेह, हाँ में दिया जा सकता है और इसमें तकनीकी के योगदान को भी कम नहीं आँका जा सकता है। वैश्वीकरण के इस दौर में दुनिया सिमट कर रह गयी है और इसमें आवागमन, संचार और तकनीकी साधनों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। हम ऐसा भी कह सकते हैं कि दूरियाँ अब मायने नहीं रखती है, क्योंकि हमारा सांस्कृतिक आधार हमें एक दूसरे से जुड़े रहने और आत्मीयता को बनाए रखने के लिए प्रेरित करता है। हम शारीरिक रूप से चाहे दूर हो, लेकिन तकनीकी का परिणामस्वरूप हम एक दूसरे के नजदीक है। तकनीकी का ही प्रभाव है कि हम एक दूसरे को देख सकते हैं, आपस में बातचीत कर सकते हैं, परिवार के सामूहिक कार्यक्रम और उत्सव में न केवल सम्मिलित हो सकते हैं बल्कि उसका आनन्द भी उठा सकते हैं और इस प्रकार अपनी संस्कृति और विरासत के संरक्षण और हस्तांतरण में प्रभावी योगदान दे सकते हैं।

तकनीकी और डिजिटल क्रांति का ही प्रभाव है कि हम परिवार और उसके सदस्यों की सेवा और सहयोग में भी योगदान दे सकते हैं। यह भी तकनीकी का ही असर है कि एक विशेष क्षेत्र और संस्कृति के कार्यक्रमों का दूसरे देशों में ऑनलाईन प्रसारण होता है जिससे पारस्परिक सांस्कृतिक स्वतंत्रता को महसूस किया जा सकता है। तकनीकी के ही परिणामस्वरूप एक ओर शिक्षा प्राप्त करने के आधुनिक तरीकों से आत्मसात किया जा सकता है तो वहीं अपनी संस्कृति को भी सहेजा जा सकता है। इसे एक तरह भी समझा जा सकता है कि एक ओर जहाँ आधुनिक विश्व में बिना तकनीकी के प्रयोग के अपने अस्तित्व को बनाए रखना कठिन है तो वही दूसरी ओर संस्कृति के संरक्षण में तकनीकी की भूमिका को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। शिक्षा से जुड़े विविध दस्तावेज और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षा और संस्कृति के व्यापक सम्बन्ध पर जोर देती है, इस तरह कहा जा सकता है कि शिक्षा और संस्कृति के संरक्षण और हस्तान्तरण में तकनीकी के योगदान को इस दृष्टि से न केवल रेखांकित किया जाना बल्कि आन्तरीकृत करना आज की महत्ती आवश्यकता है।

रवि सोनी
सहायक आचार्य, कम्प्यूटर विज्ञान विभाग

वैदिक शिक्षा पद्धति

वेद शब्द विद् धातु से बना है जिसका अर्थ "जानना" अर्थात् ज्ञान है। वेद वह हैं जो इष्ट प्राप्ति में सहायक तथा अनिष्ट वस्तुओं में निराकरण का अलौकिक उपाय बताता है। वेद केवल भारत के लिए ही नहीं अपितु संपूर्ण संसार के लिए प्राचीन साहित्य है। ऋग्वेद सबसे प्राचीन संहिता है। वैदिक साहित्य के अंतर्गत वैदिक संहिता, ब्राह्मण व उपनिषद ग्रंथ मिले थे।

वैदिक शिक्षा पद्धति के अनुसार यदि शिक्षा का आरंभ उचित समय पर ना हुआ हो तो बालक के उज्ज्वल शैक्षिक भविष्य की आशा करना व्यर्थ है। वेदानुसार शिक्षा का प्रारंभ बाल्यावस्था से करना चाहिए क्योंकि इस समय बालक का मस्तिष्क लचीला, तीव्र स्मृति तथा बुद्धि ग्रहणशील रहता है। गुरु के पास शिक्षा हेतु जाने को "उपनयन संस्कार" कहा जाता है। वैदिक काल में गुरु द्वारा अपने शिष्यों का चरित्र निर्माण करना एवं आवश्यक उत्तरदायित्व माना जाता था क्योंकि -

"अच्छी आदतों का पुंज ही चरित्र है।"

इस कथन को ध्यान में रखते हुए शिष्यों को ब्रह्म मुहूर्त में उठना, नित्य ध्यान पूजन करना, सदा सत्य वचन बोलना, सादा जीवन व्यतीत करना तथा सभी प्राणियों व जीवों से प्रेम करना इत्यादि की शिक्षा दी जाती थी। गुरु अपने शिष्यो में ऐसे गुण उत्पन्न करते थे जिससे वह देश के लिए योग्य, कर्मठ एवं भावी कर्णधार बन सके। शिष्यों में इंद्रिय निग्रह, आत्म संयम तथा आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न की जाती थी।

सत्यंवदं धर्मं चर

प्राचीन काल में गुरु ज्ञान व आध्यात्मिक प्रगति की दृष्टि से सर्वोच्च व्यक्ति होते थे, पुत्र समान रखते थे तथा उनके भोजन वस्त्र, आवास, सुरक्षा इत्यादि की व्यवस्था गुरुकुल में करते थे। चरित्र निर्माण पर बल देते हुए अपने शिष्यों से यही कामना करते थे कि वह उनसे भी अधिक यश, कीर्ति को प्राप्त करें। शिष्य शिक्षा ग्रहण करने तथा ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता था। अतः उसे ब्रह्मचारी कहा जाता था। वैदिक काल में गुरुजनों को सारी पुस्तकें कंठस्थ रहती थी। शिष्यों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति थी। गुरु अपने शिष्यों को भी सारी पुस्तकें कंठस्थ करा देते थे। गुरु का यही लक्ष्य होता है कि शिष्य को विषय का सम्यक ज्ञान हो। उस समय समाज को उन्नति के शिखर पर पहुँचाने वाली एकमात्र आधारशिला शिक्षा ही थी। अतः वैदिक काल में सबको शिक्षा के समान अवसर प्राप्त है।

वैदिक कालीन विद्यार्थियों को ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद,अर्थवेद चारों संहिताओं के मंत्रों को कंठस्थ करना पड़ता था। इसके अतिरिक्त शिक्षा, व्याकरण, ज्योतिष, छंद, निरुक्त तर्कविज्ञान आदि विषयों का भी अध्ययन करना पड़ता था। ब्रह्मचारी जब अपनी शिक्षा समाप्त कर लेता था तब उसका "समावर्तन संस्कार" किया जाता था। इस अवसर पर गुरु के समक्ष उसे प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी कि वह जीवनभर गुरु द्वारा दिए गए उपदेशों का पालन करेगा तथा अपने चरित्र को उच्च बनाएगा।

मितिक्षा अग्रवाल
तृतीय वर्ष, बी.ए.बी.एड. विज्ञान संकाय

शिक्षा में ध्यान का महत्त्व

हमारे विद्यार्थी जीवन या भावी जीवन में अक्सर हम महसूस करते है कि हम या तो विचारों से या अपने काम से थक जाते है। कई विद्यार्थी अपनी पढ़ाई के समय विचारों की कड़ी में खो जाते हैं और जब लौटते है तो समय को बीता पाते हैं। तो क्या कुछ है जो हमें इन बेमतलब के विचारों से मुक्ति दिला सकता है, उत्तर है - ध्यान। ध्यान किसी भी एक वस्तु, विचार या पढ़ाई को लगातार सोचना है। जब हम शरीर से शुरू करते हुए हृदय तक किसी एक विचार या ईश्वरीय प्रकाश के बारे में सोचते हैं तो हमारी एक जगह ध्यान लगाने की क्षमता के साथ-साथ हमारे विचारों का फिल्टर भी होता है और केवल अच्छे विचार और सही शिक्षा हम ग्रहण करते हैं। ध्यान हमारे जीवन की गुणवत्ता को कहीं हद तक बढ़ा देता है तो आप कब से ध्यान को अपनाने जा रहे हैं ?

नीलीमा देतानी
बी.एससी.बी.एड. तृतीय वर्ष

शिक्षा का इतिहास

प्राचीन काल से ही हमारे देश में शिक्षा को एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। हमारे भारत में गुरुकुल परंपरा सबसे प्राचीन व्यवस्था रही है। शिक्षा की गुरुकुल परंपरा से ही हमारे भारत को विश्व गुरु का दर्जा दिया गया है। गुरुकुल-वह क्षेत्र जहाँ गुरु का कुल यानी गुरु का परिवार निवास करता हो। इसी शिक्षा पद्धति को ध्यान में रखते हुए कहा गया है:-

"मातृ देवो भवः! पितृ देवो भावः!"
"आचार्य देवो भवः! अतिथि देवोः!"

अर्थात् माता-पिता गुरु अतिथि संसार में चार ही प्रत्यक्ष देव हैं, इनकी सेवा करनी चाहिए।

गुरु के महत्त्व के लिए कहा गया हैं -

गुरुर ब्रह्मा, गुरुर विष्णु, गुरुर देवो महेश्वरायः।
गुरुर साक्षात् परम ब्रहम्, तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

गुरुकुल शिक्षा में संस्कार, संस्कृति, शिष्टाचार, सभ्यता सिखाई जाती थी। प्राचीन काल में एक छत के नीचे बैठकर छात्र अनुशासन व मानवता के साथ अध्ययन करते थे व माता-पिता, बुजुर्गों व शिक्षकों का सम्मान करते थे। परन्तु वर्तमान समय में समय के साथ जो शिक्षा प्रणाली विकसित हुई व पश्चिमी प्रणाली से पूर्णतः प्रभावित हैं।

प्रतिभा पारीक
प्रथम वर्ष, कला संकाय

शिक्षा

मिली मुझसे वह तो मैंने है पढ़ना सीखा,
मिली मुझसे वह तो मैंने कुछ करना सिखा।।

दो वर्णों का नाम है जिसका,
ज्ञान दे जो हमें ज़िंदगी भर का।।

देती हमें जो ज्ञान की भिक्षा है,
कहते हैं उसे हम शिक्षा है।।

जिन्होंने हमारा भविष्य उज्ज्वल बनाया,
जिन्होंने हमें दीक्षा का मतलब समझाया।।

शिक्षक के बिना शिक्षा अधूरी,
शिक्षा बिना शिक्षक अधूरा।।

जो बनाते जीवन उज्ज्वल हमारा,
कहते हैं उसको ज्ञान का पिटारा।।

ममता चौधरी
प्रथम वर्ष, बी.एससी.बी.एड.
विज्ञान संकाय

योग रखे आपको निःरोग

योग मुख्य रूप से एक आध्यात्मिक अनुशासन है जिसमें जीवन शैली का पूर्ण रूप से आत्मसात् किया गया है। योग कला के साथ-साथ एक विज्ञान भी है जो शरीर, मन एवं आत्मा को एकजुट बनाता है। योग संपूर्ण मानवता को भारतीय संस्कृति की ओर से वह अनमोल तोहफा है जो शरीर, मन, कार्य, विचार, संयम, संतुष्टि सहित मानव एवं प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। लेकिन वर्तमान युग में हमारे लिए यह चिंता का विषय है कि जो देश सदियों से योग विद्या का साक्षी रहा है उस देश के अधिकांश युवा आज आधुनिक जीवन शैली और खान-पान का बदलते स्वरूप के कारण कम उम्र में ही तनाव, मधुमेह, ब्लड प्रेशर इत्यादि बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं।

इस समस्या के निदान हेतु योग वो चिकित्सा है जिसे यदि हम अपनी जीवन शैली का हिस्सा बना लें तो मनुष्य शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से जुड़ाव महसूस करेगा जिससे मानव जीवन का सर्वांगीण विकास होगा।

जितेन्द्र यादव
सहायक प्रबंधक,
मानव संसाधन विभाग

एक नई शुरुआतः ऑनलाइन शिक्षा

यह जो ऑनलाइन ख़त प्लान आया है,
नया एक सबक सिखाया हैं।

इंटरनेट पर ऑनलाइन पढ़ाई,
घर बैठे बैठे करें हम भाई।

नई-नई तकनीकें सीखी,
और शिक्षा का हुआ प्रसार।

बहुत ही काम आया है हमको,
नई सदी का यह अविष्कार।

कुसुम पारीक
तृतीय वर्ष, कला संकाय

शिक्षा का सफर : वैदिक से आधुनिक

आज हम जिस आधुनिक शिक्षा को देखते हैं उसने भी बहुत लंबा सफर तय किया है। अगर हम बात करें प्राचीन भारत की तो उस समय शिक्षा का मतलब होता था कि एक बालक को आदर्श एवं संस्कारों से युक्त व्यक्ति बनाना, भारत में गुरुकुल, आश्रम एवं पेड़ों की छाँया के नीचे बच्चों को शिक्षा दी जाती थी। गुरु केवल बोलते थे और विद्यार्थी को केवल सुनकर को ध्यान में रखना होता था। लेकिन प्राचीन काल में महिलाओं को व शुद्रों को शिक्षा ग्रहण करने की अनुमति नहीं थी।

आधुनिक भारत में हम अंग्रेजों के गुलाम बन चुके थे। तब शिक्षा में पूर्ण रूप में बदलाव देखने को मिला। भारत में आधुनिक शिक्षा प्रणाली लाने का श्रेय पूर्ण रूप से "लार्ड मैकाले" को दिया जाता है साथ ही उन्होंने अंग्रेजी भाषा को भी स्थापित किया है। अंग्रेज पूर्ण रूप से भारत को गुलाम बनाना चाहते थे इसलिए उन्होंने अंग्रेजी भाषा को महत्त्व दिया और आज हम सभी की यह स्थिति है कि हम सभी अंग्रेजी भाषा के गुलाम बन चुके हैं। आधुनिक शिक्षा यहीं खत्म नहीं होती है जैसे-जैसे कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल, फोन का तेजी से इस्तेमाल हो रहा है यह भी एक आधुनिक गुलामी है।

फाल्गुनी कंवर शेखावत
प्रथम वर्ष, कला संकाय

गुरू का महत्त्व

प्राचीन भारत में गुरुकुल का अत्यधिक महत्त्व था। गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने के लिए शिष्यों को सर्वप्रथम गृह त्याग रूपी परीक्षा से गुजरना पड़ता था एवं उसमें उत्तीर्ण होने पर किसी भी प्रकार की अंकतालिका प्राप्त नहीं होती थी, होता था तो केवल श्रव्यज्ञान। गुरुकुल शिक्षा के रूप में मनुष्य को अनुशासन, गुरु व माता-पिता का सम्मान करना, छोटे बड़ों का आदर करना आदि की शिक्षा भी दी जाती थी, जब कोई व्यक्ति गुरुकुल में प्रवेश कर लेता था तो उसे पूरी तरह गुरु के अधीन रहकर ही अपनी शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करनी होती थी। इसीलिए गुरू को माता के पश्चात् प्रथम गुरु माना जाता है।

हंसा कँवर
प्रथम वर्ष, कला संकाय

ज़िंदगी

नहीं कहूँगी आसमान है ज़िंदगी
कहानी तूने लिखी है अपनी
ये तो केवल भारी प्रश्नों की
एक खाली किताब है ज़िंदगी।

जीवन के नए अध्याय को लिखते वक्त
कुछ नए किरदार आयेंगे,
कलम तेरे हाथों में होगी
हाथ मगर कभी-कभी कंपकपाऐंगे।

स्याही मगर जब तक खत्म ना हो जाए,
अंत तक जीवन के आखिरी पन्नों को,
बेहद खूबसूरती से लिख कर ही जाऐंगे।

कल्पना प्रजापति
तृतीय वर्ष विज्ञान संकाय

भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य संस्कृति में अंतर

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृतियों में से एक है। भारतीय संस्कृति एकता, सद्भावना, शांति एवं प्रेम के प्रतीक हैं। जहाँ कहीं शांति, प्रेम, एकता, सद्भावना की बात आती है वहाँ भारतीय संस्कृति का नाम सबसे पहले लिया जाता है। भारतीय संस्कृति अपने रीति-रिवाजों, परंपराओं, रहन-सहन, खान-पान आदि के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है एवं समृद्ध भारतीय संस्कृति को संस्कृतियों की जननी कहा जाता है। भारतीय संस्कृति में सभी एकजुट होकर रहते हैं लेकिन पाश्चात्य संस्कृति में आ जाने से लोगों में स्वार्थ की भावना आ गई है। पहले पड़ोसी भी अपने घर के सदस्यों के समान होता था अब घर का सदस्य पड़ोसी के समान होता है।

एम.एन.श्रीनिवास ने पश्चिमीकरण की अवधारणा देते हुए बताया है कि पश्चिमीकरण से ईसाई मिशनरी जैसे नई संस्थाओं का जन्म हुआ है। पाश्चात्य संस्कृति का अत्यधिक प्रचार-प्रसार ईसाई लोगों द्वारा किया गया है। पाश्चात्य संस्कृति ने बच्चों से माँ का आँचल छीन लिया, माँ के आँचल का स्थान जींस टॉप ने ले लिया। भारतीय संस्कृति में जमीन का आसन बिछाकर बैठकर भोजन ग्रहण करने की परंपरा थी। उसका स्थान पाश्चात्य संस्कृति में मेज-कुर्सी ने ले लिया।

भारतीय संस्कृति में लोग अपना काम ईमानदारी से करते थे वे अपने काम को ही ईश्वर की पूजा मानते थे लेकिन पाश्चात्य संस्कृति में लोग हर काम में अपना स्वार्थ देखते हैं और बेईमानी करते है।

भारतीय संस्कृति में परिवार के सभी सदस्य एक साथ संयुक्त परिवार में रहते थे लेकिन लोगों ने पश्चिमी संस्कृति को अपनाना प्रारंभ कर दिया है जिससे लोगों का झुकाव एकल परिवार की ओर हो गया है। इसमें मैं और मेरे बच्चे तक ही परिवार सीमित हो गया है। पाश्चात्य संस्कृति का युवा पीढ़ी और बच्चों पर नकारात्मक एवं बुरा प्रभाव पड़ा है। बच्चे अपने संस्कार, सभ्यता और सहनशीलता को भूलते जा रहे हैं। बच्चों को अपने अभिभावकों, गुरुजनों एवं बड़ों के सुझाव या बातें बोझ व बुरी लगने लगी हैं। पाश्चात्य संस्कृति से युवा वर्ग मदिरा व अन्य नशों की ओर आकर्षित हुए है। इस पाश्चात्य संस्कृति के कारण हम अपनी महान, समृद्ध प्राचीन भारतीय संस्कृति के रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, संस्कार, सभ्यता को भूलते जा रहे हैं। यह चिंता का विषय है कि अगर इस विषय पर गंभीरता से विचार नही किया तो एक दिन हमारी संस्कृति केवल शब्दों में ही नज़र आएगी।

शिवानी बंजारा
द्वितीय वर्ष, कला संकाय

अनुशासन के प्रतीक हमारे खेल

भारतीय संस्कृति से लेकर पाश्चात्य संस्कृति तक सब जगह खेलों का अत्यंत महत्त्व है। खेल सदैव हमें अनुशासन का पाठ पढ़ाते हैं। आप किसी भी खेल को गंभीरता से देखें तो लगता है कि खेल में टीम, टीम का खेल व उसमें भी मानसिक, शारीरिक एक ऐसा अनुशासन जिससे खिलाड़ी उस खेल को जीतता है। यदि हम अनुशासन व नेतृत्व को स्थापित करना चाहते हैं तो हमें खेल अवश्य खेलने चाहिए।

कोमल राठौड़
प्रथम वर्ष, कला संकाय

अधूरा बचपन

अनोखा-सा बचपन था, अनोखी-सी यादें,
अनोखी-सी लड़की थी, अनोखी-सी मुरादें,
अनसुनी कहानी थी, जो किसी ने ना सुनी थी,
अकेली थी वो, शायद कुदरत में घुली थी।

आकाश के तारे गिनना आसान नहीं होता,
वो चाँद से तारों का पता पूछती थी,
आँगन में रोशनी का तो पता नहीं,
वो सूरज से धरती की दशा पूछती थी।

क्यों जो होता है वो दिखता नहीं,
जो सब पाता है क्या वो खोता नहीं?
ज़िन्दगी में खुशियाँ तो बहुत चाहिए,
पर क्या गम में कोई रोता नहीं?

माँ का साया कभी मिला नहीं उसे,
अपने आँसुओं में प्यार का नज़राना ढूँढ़ती थी,
पिता कहके किसी को बुलाना चाहती थी,
वो कुदरत में अपना आशियाना ढूँढ़ती थी।

वंशिका जैन
स्नातकोत्तर पूर्वार्द्ध, प्राणी विज्ञान

किशनगढ़ : गुंदोलाव झील

गुंदोलाव झील का निर्माण सावंत सिंह जी ने करवाया था। गुंदोलाव झील हमेशा से ही आकर्षक का केन्द्र रही है जहाँ पर किशनगढ़ शहर अपने आप में एक सुंदरता का प्रतीक है। इसी में किशनगढ़ की सुंदरता रूपी जलराशि हमें देखने को मिलती है। वर्तमान में मार्बल नगरी ऐतिहासिक गुंदोलाव झील का गर्मी बढ़ने के साथ ही जलस्तर कम हो रहा है। इसके चलते जलीय जीव-जंतुओं के जीवन पर भी संकट के बादल मंडराने लगे हैं। इसमें अनेक जलीय जीव है जो इसे जीवनदायिनी मानते हुए उसमें प्रसन्नता से विचरण करते हैं।

गुंदोलाव झील एक जलीय केन्द्र तो है परन्तु इसके रख-रखाव की ओर यहाँ के वासियों की चिंता अल्प है। झील में लगातार नालों के माध्यम से गंदगी पहुँच रही है इससे झील का पानी दूषित तो हो रहा है साथ ही जलीय जीव-जंतुओं के लिए घातक भी सिद्ध हो रहा है। कई नालों की सफाई निरंतर ना होने के कारण बारिश के समय नालों में जमी गंदगी सीधे ही झील में पहुँच रही है। जिससे पानी जीवों के लिए घातक हो रहा है।

प्रसन्नता की बात यह है कि इस झील को सौन्दर्य की दृष्टि से देखें तो एक तरफ फूल महल है दूसरी तरफ काली माता मंदिर एवं भैरव मंदिर है तो एक तरफ नवग्रह मंदिर व खुला आसमान है।

इसे पर्यटन की दृष्टि से विकसित किया जाए तो रोजगार के अवसर तो बढ़ेंगे ही साथ ही किशनगढ़ पर्यटन की नज़र में भी नाम कमाएगा।

गायत्री राजावत
प्रथम वर्ष, कला संकाय

जीवन हित में पर्यावरण

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण को देवत्व का स्थान दिया गया है। इसलिए पर्यावरण के प्रमुख तत्त्व जल, वायु, भूमि, अग्नि, आकाश आदि को देवता के समान माना जाता है। मनुष्य पाँच तत्त्वों (जल, अग्नि, पृथ्वी, वायु, आकाश) से मिलकर बना है और वैदिक काल से ही हमें इन सभी तत्त्वों को देवता मानकर उनकी पूजा करना सिखाया जाता है। अतः भारतीय संस्कृति पर्यावरण संरक्षण में अपनी सकारात्मक भूमिका प्रदान करती हैं तथा मनुष्य और पर्यावरण का सम्बन्ध आदिकाल से ही अत्यंत गहरा होने के साथ-साथ मनुष्य के जीवन का आधार रहा है। पर्यावरण में जैविक एवं अजैविक दोनों ही घटकों को सम्मिलित किया जाता है जैसेः- जलवायु, मिट्टी, पानी, जीव-जंतु, पौधे इत्यादि।

यह प्रकृति प्रदत्त अनमोल उपहार है जिनसे जीवन पोषित होता है। वर्तमान समय में हम भूमण्डलीय ऊष्मीकरण के युग में अपनी संस्कृति को भुलाकर पश्चिमी देशों की संस्कृति से प्रभावित हो रहे हैं और हमारी पर्यावरण के प्रति चेतना कम होती जा रही हैं। वर्तमान समय में तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या एवं औद्योगिकरण के कारण प्राकृतिक संसाधनों का तेज गति से दोहन एवं उपभोग हो रहा है जिसके परिणाम स्वरूप जैव विविधता में कमी, अम्लवर्षा, मरुस्थलीकरण, जलवायु परिवर्तन, भूमण्डलीय ऊष्मीकरण के खतरे उत्पन्न हो रहे हैं। इससे निकट भविष्य में मानव सभ्यता का अंत दिखाई दे रहा है। पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व बनाए रखने तथा हमारे चारों तरफ सुरक्षा कवच को बचाने के लिए स्थानीय व राष्ट्रीय वैश्विक स्तर पर कार्य किए जाऐ तथा पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा बचपन से ही दी जानी चाहिए।

पर्यावरण संरक्षण से ही धरती पर जीवन का संरक्षण हो सकता है। पर्यावरण ही संपूर्ण जीवन का आधार है और संपूर्ण पृथ्वी ग्रह के स्वास्थ्य एवं विकास करता है जैसा कि कहा जाता है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है ठीक उसी तरह स्वस्थ पर्यावरण में स्वस्थ मानव का विकास होता है।

।।प्रकृति का मत करो शोषण,
यही करती है जीवों का पोषण।।

मनीषा यादव
सहायक आचार्य, भूगोल विभाग

आधुनिक शिक्षा संस्कृति में गृह विज्ञान विषय की प्रासंगिकता

गृह विज्ञान विषय वास्तव में एक कलात्मक विज्ञान है। यह विषय कला व विज्ञान का एक अनोखा संगम है। इसके अंतर्गत हम आहार, पोषण, उपचारात्मक पोषण, मानव शरीर, क्रियाविज्ञान व पोषणिक आवश्यकताओं का ज्ञान ग्रहण करते हैं साथ ही इसमें मातृकला, शिशुकल्याण, वस्त्र, परिधान व आंतरिक सज्जा सम्बन्धित आदि विषय समाहित हैं। व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र के उत्थान में गृह विज्ञान का अहम योगदान है जिसे नकारा नहीं जा सकता।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आज तक जितने भी अनुसंधान या अविष्कार हुए हैं उन सभी का आखिरी उद्देश्य व्यक्ति के परिवार को सुखी संपन्न रखने के लिए हुआ है। गृह विज्ञान विषय की शिक्षा प्राप्त कर लड़की एक आदर्श पाक विशेषज्ञ, भोजन प्रबंधक, सलाहकार मनोवैज्ञानिक, बैंकर टेलर, शिक्षाविद, गृहप्रबंधक, समाजसेवी, आंतरिक सज्जाकार भी बन सकती हैं। यह विषय बालिकाओं के लिए जितना उपयोगी है उतना ही बालकों के लिए भी उपयोगी है। हमेशा हर विषय अपनी उपयोगिता रखता है। गृह विज्ञान भी अपनी बेटियों के लिए एक विशिष्ट उपयोगिता रखता है।

डॉ. मिनल त्रिपाठी
सहायक आचार्य, गृहविज्ञान

Spring Season

Spring has come,
Spring has come
many colourful
flower were blooming
In the garden and in the forest
Feeding soft buds
with the arrival of spring
the mustard flower were fragrant
Mangoes plums were ripe
Nightingale was singing
set on the branch Sparrow Chriping set
on the tree Butterflies also started to
Hover, Winter had coincided with
summer Dulness were gone away
awaken a new enthusiasm
in the mind of people with the
arrival of spring,
Spring has come!
Sprint has come!

Muskan Bano
B.A. B.Ed. Part II

Education : A Weapon to Change the World

Education is a systematic process through which a person acquire knowledge, experience, skill and attitude. In more words,

Education that makes us physically strong
Education that makes us mentally strong
Education that makes us morally strong
Education that makes us socially strong
Education that makes us spiritually strong

So, education is the most powerful weapon
Which you can use to change the world

Bharavi Snehil Khatri
B. Sc. Part I

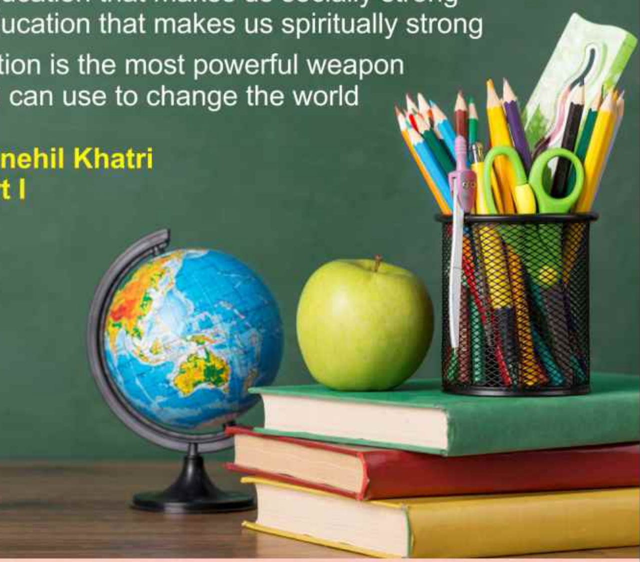

Empowerment of Women

Women are the pillars of society. They have the power to create and build a new life. A woman plays various roles in her whole life such as the role of a daughter, sister, mother, friend, life partner and many more. Even after having so much importance of a woman. In today's society, women are facing discrimination and exploitation from years back. No special attention was given on educating a girl because she was always treated as inferior and it is regarded that there is no need to teach a woman because men always wants to be superior than women.

Empowering a woman means giving her all social, economic and political freedom. Just like human being can't survive only with water, food is also necessary. In the some way, a society can't flourish only by men, it also needs proper involvement of women in it.

Presently, society is getting awared about the need of educating women and empowering them. There are many government programmes starting day by day which are helping a lot in increasing the involvement of women in every sphere of life.

Many of us don't known about the woman who first raised her voice against this criticism of not educating girls. That woman was Smt. Savitri Bai Phule.

Even after so many initiatives and schemes are running by the government, no equal place is given to women, completely. The literacy ratio in India is just 65% of females and 82% of males. It is clearly indicated here that a woman is still not getting all the rights which she deserves in the society. In women empowerment list, India is at 140th position. It is the reason that India is still a developing country. People of the society must change their mindset regarding women because they have the potential to reach great heights and achieve all their goals.

They must be given the opportunity to prove themselves and surely they have the ability to do anything. They are not lag behind men in any sphere of life. Women have the ability to change the whole world.

Jagrati Jain
B.A. Part I

Let's Pardon

Every heart has the power to forgive & pardon
we just to use it.
we are full of weakness and errors;
let us mutually pardon each other
and our follies because –
it is the first law of nature
Pardoning of people's word, is
one of the most beautiful thing
that we received from mighty king.
it there is something to Pardon in everything.
there is something to condemm, "forgiveness"
offenders never pardon, pardoning
is the attribute of strong
it we cannot forgive others for
things they have done
then how do we expect Good
- to Pardon us.
Pardon is the best flower of victory
the Power of Pardoning,
we have to keep alive in our heart forever.
we Pardon as long as we alive.
we Pardon as long as we alive.

Priya yadav
B.A. B.Ed. Part I

Face of the Moon

My mind immersed in thought
Looking at that Moon only
Where's your face asking this
Moon,
But the moon does not
answer
The moon turn back and
Folded the star hand's and
Started saying I have no face
Nature Adore me in different
Way's every time is summer
in winter and sometimes
Nature hide itself in many
Clouds
Clouds and my light
God made me to bring
Happiness on your face
But perhp's got forgot to
make my face is in Harry.

Sanjana Bairwa
B.A. B.Ed. Part II

Struggle

My life is full of struggle
Life is like an extensive Road
Not stopping Point
But sometimes I thinking
Struggle is a part of life
to complete my dreams
Do struggle and get positive results
Many times, I afraid and nervous
Fighting quietly inside with myself.
But to survive a struggle is must.
You have to struggle at every turns of life
Struggle makes us strong
only Believe yourself
your struggle will success, one day
Then all your dreams will come true.

Shivani Meena
B.A. B.Ed. Part II

Mountain

Precious gem of Nature
Ocean of Peace
The place who attracts Tourists
The Mountain
The Part of landscape play he
Is wearing the sizeable white sheet
Called it, peace and clam
The sky scarping
Whose infinite heights that's
A huge Mountain
Rising the sunrays
Whose peak, on filled with luster
Appear's The Gold Colour
At sunset "Twilight" that's
Geaming Throught out redness scatter
It's become visible
Admirable and Heart warming
Wellspring of Rivers
Melts from the ice bergs
Various stream, that flows from here
It's make river
Journey of Heaven
Whoever, traveler's ultimate ambition
Where to reach & fell most alive
"The Inception & Terminate of Whole Nature"
"The Mountain"

Kanishka Sain
B.A. B.Ed. Part II

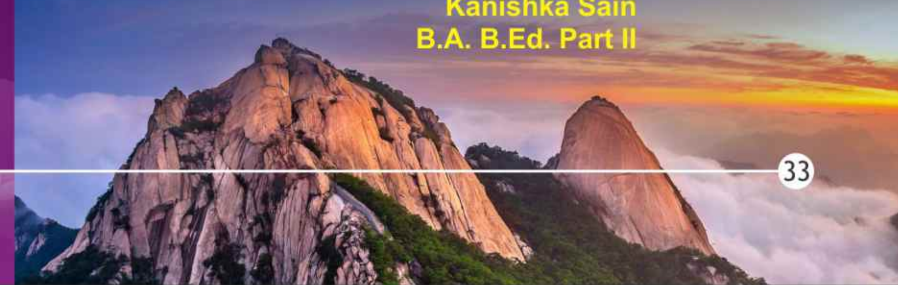

Desert

without moisture
without rain
A Part of landscape is called
"Desert"
In Desert
Dust storm still wave and
make Tornado
cold at night and hot during day
and sand is magical golden
when sunlight falling on the soil.
It look like
A golden desert
In dray desert
The Pride of creature
who assemble for the specific climatic
It's called the ship of desert
The camel
A drop of rain
It seems the pearl of dryland
Its Precious for desert
The large area of harren land
A delusion is a false believe of
"Mirage"
Across the land
There is hope, when moon dream and
faith
When moon light and stars shone

Akshara Jain
B.A.B.Ed. Part II

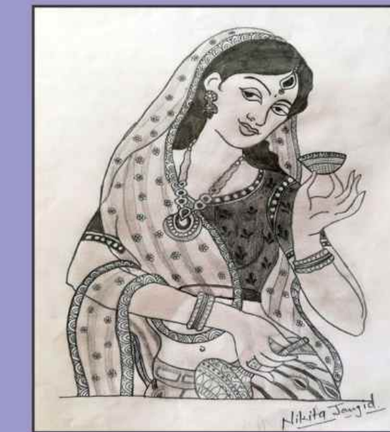

निकिता जाँगिड़
द्वितीय वर्ष, विज्ञान संकाय

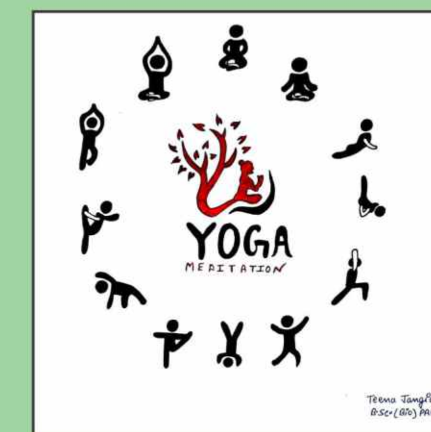

टीना जाँगिड़
द्वितीय वर्ष, विज्ञान संकाय

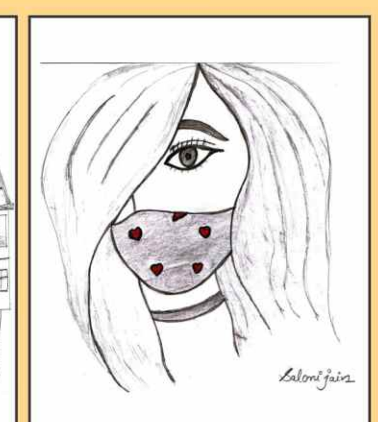

सलोनी जैन
प्रथम वर्ष, कला संकाय

यह लेखकों के अपने मौलिक विचार है।